

प्रश्न चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०
१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०
१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०
१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०

१. हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है
 जो हो गया सो हो गया अब खुशी की वार्ता
 होने वाली है खोटे दिन गये श्रेष्ठ आने वाले
 हैं आराम हो कर जफत हो गाया जिसकी
 चाहना है मिलेगा और ये जो चित्त में काम
 विचार है देर से होगा दिन तुमको बहुत
 दिनों से मध्यम हैं मर्जी के माफिक लाभ
 नहीं है नष्ट दश में रंज क्लेश पीडा गुप्त चिंता
 शत्रुता होती है सो अपनी रास पै जो दो तीन
 ग्रहना किस हैं दान मंत्र जाप करो तब घर
 में आनन्द मंगलाचार जीव की साप्ति
 यात्रा से लाभ काम फल होंगे गुप्त प्राप्ति
 होगी तुम्हारे शरीर पै व्रण यानी फोड़े
 फुंसी का निशान है आलस्य रहता है
 नई नई बात का चिंतन करते हो

२. हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फिक्र से गुजरे और खर्च विशेष लाभमध्यम सो अब प्राप्तिहोगी जीवका लाभहोगा व्याधा रंजनष्टहोंगे घरमें खुशीहोगी चित्तकीचिंताचित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसी नई नई उठतीहैंसोवृथाजातीहैंएकजीवमेंचित्त बहुतरहताहै अब ईश्वर चाहेतो कहींसे खुशीकी बातसुनोगेउच्चपदवी प्राप्तहोगी नाकिस ग्रहोंकादानऔरसुवेदयाम शिवजीका भजनकराकरो और येजो प्रश्न किया है वो कामभी फतैहोगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम कावू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

३. हे प्रच्छन्न तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा
 प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ठ
 आनेवाली है जीवकी चिंता और लाभ
 का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा
 होता है और ये जो अब फिक्र है स्वर्चसो
 दूर होगा आराम गुप्तवो भी मिलेगा फल
 होगा कष्ट नष्ट होगा कई ग्रह नाम की
 रास परना किस है सो उन ग्रहों का उपाय
 विधि पूर्वक पंडित से कराओ बिना दान के
 कराये कार्य सिद्ध देर से होगा इस कारण चा
 वल मिष्टान्न स्वेत वस्त्र रजानित अर्थात् श्र
 द्धा प्रमाण चांदा दान का करना बहुत श्रेष्ठ
 है मन की कामना पूर्ण होगी अचानक ला
 भ की सुरत होगी चित्त स्थिर करके किसी
 काल ईश्वर का भजन करा करो प्रश्न श्रेष्ठ
 है अजाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्ठ है

४, हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का ये फल है कार्य आधीन सेवा हर अर्थात् काम का बू सेवा हर चिंता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त करे है परंतु उनसे कुछ हो नहीं सक्ता १ जीव में चित्त बहुत रहता है दशा मध्यम के कारण अनेक प्रकार की दान वार्ता लाप सोचो हो समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का चित्त बन हो कर निर्फल होता है कई फिक भंगी लगे हुवे जीव की प्राप्ति होगी फते और चंगा होगा और ये जो अब चिंता है सब दूर हो पीत दान करो चने की दाल हलदी पेल्ला बस्त्र पेल्ले पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्ता चिंता दूर होगी कार्य फते होगा मन वांछित फल प्राप्त होगा दशान्यून के कारण फिक चिंता गृह में क्लेश होता है अब दशा श्रेष्ठ आने वाली है ये कार्य हो कर नवीन कृत्य करोगे ॥

५. हे प्रच्छन्नतुम्हारा प्रश्नचिंता रूपी कष्टका है खर्च विशेष जीवकी लालसा जीव चिंतातरह उदवेगचित्तस्थिर नहीं काम का बूसे बाहर है दूसरे आदामियों को भी बहुत फिक्र है जब दशामध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगी परंतु पापगृहों का पूजन विधि पूर्वक बटुक भैरव का मंत्र भी जपवाओ (मंत्र) ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्री बटुक भैर्वा य आपदुद्धारणाय सर्वविघ्ननिवारणाय म मरक्षा कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से मनो कामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूरे होते हैं नई रवार्ता का चितवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

६. हेमच्छक कामना पूर्ण होगी खुशी की वार्ता होने वाली है मिलेगा मज्जा के माफिक काम हो चित्त उस विना व्याकुल साग्रहता है दशा न्यून के कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च जीव का दुख काम दूसरे के काबू में होना और दो तीन गृह तुम्हारी रास पै कै डे हैं मध्यम हैं पंचाग में देखो उन मध्यम ग्रहों का पूजन दान मंत्र स्थिर चित करके कराओ कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और ये जो फिक्र है सो दूर होगा और कई फिक्र खर्च के आवें हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीव की प्राप्ति होगी परंतु विलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अंजाम अच्छा दीखे है कार्य में भी लाभ होगा शिवजी का पूजन नित्य किया करो

७, इस समय के प्रश्न का फल यह है कि का
म ठीक बैठेगा या न बैठेगा इज्जत का भय
हो जाता है ऐसी दशा में गवन भी होता है
गुप्त चिन्ता रहे है कभी चिन्त में कुछ आता है
कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्च विशेष
पड़ता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आ
राम होगा सो अब न्यून दशा बीचने वाली
है और श्रेष्ठ आने वाली है परन्तु काम में देर
है इष्ट देव का पूजन कराना चाहिये पित्रों के
निमित्त मिष्टान्न वस्त्र कच्चा दूध पीपल को
जल देना श्रेष्ठ है कई महीने से भाग्य की ही
न ता यानी मध्यम है पूजन करने से धन की
प्राप्ति जीव का मिलना कष्ट रूपा रंज का
दूर होना ये जो अब बहुत चिन्ता है काम
जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम
काबू से बाहर होगया दशा मध्यम है

८. हे प्रच्छकतुम्हारी रास पै आजकल
 कई ग्रहना किस हैं पंचांग खोलकर देखो
 जब ऐसे ग्रह रास पे आते हैं लाभ कम होती
 है शत्रु उत्पन्न होते मित्र व प्यारों से जुदाई
 होती है कष्ट रंज होते हैं आमदनी होती रुक
 जाती है जहां पूर्ण लाभ समझो अधूरा
 होता है एक जीव लालसा आस लगी रहे है
 व्यै दीर्घ लाभ मध्यम हो काम होने का हो
 फिर तार भंग हो जा है सो अब मध्यम ग्रहों
 के दान जाप करगओ आप भी ये मंत्र जपो
 ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वासुदेवाय नमः बटुक भैर
 वाय आप दुद्धारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा
 दान मंत्र जाप करने से ये जांतुम्हारे मन की
 कामना है पूर्ण होगी प्राप्ति होगी कष्ट दूर हों
 पुत्रों की लाभ राज से फले मित्र से प्रीति विशेष
 इतने उपाय से बनेगा दशा मध्यम रहेगी

६. हे प्रच्छकये जो तुमने प्रश्न किया है
 अब दशाश्रेष्ठ आने वाला है कामना पूर्ण हो
 गी जो काम चिंत में धारण करा है सो मिले
 गा चिंत दूर होगी काम फल तै होंगे मित्रों से
 प्रीत और कष्ट पीड़ा नष्ट होगी जो विचार है
 कामठी कबै ठेंगे दशा बहुत दिनों से मध्यम
 थोव्यै विशेष हुवा जीवकी प्राप्ति होगी रिण
 की न्यूनता होय प्रश्न श्रेष्ठ है उद्योग व उपाय
 पहले तुमने बहुतै करे परानि फल गये काम
 का वृत्त वाहर है पर अब ईश्वर आनन्द खुश
 खूबरा की बात करे गे गुप्त लाभ होये जो प्रश्न
 विचार है इस के वास्तु श्री देवी दुर्गा लक्ष्मी
 का पूजन कराओ चावल चांदी से त्रयस्त्र
 श्वेत फूल का दान कराओ कई ग्रह मध्यम
 है सो उपाय करने से शीघ्र मन की कामना
 पूर्ण होगी एक जीव का ध्यान रहता है

१० हे प्रच्छक काम का वृत्त बाहर है और धन का व्यय विशेष है अकस्मात् ये मामला है सो जीवकी चिन्ता है और आदमी को भी चिन्ता बहुत है इज्जत का खयाल है बड़े खर्च दीखे है और तुम पर उपकारि सत्यवार्ता को पसंद करो हो छलछिद्र के काम को पसंद नहीं करते तुम्हारा प्रश्न जीव और धन का है और इज्जत का भय होता है अनेक प्रकार की बातों सोचो हो निर्फल जाती है पता नहीं लगता जतन भी करे अवनवग्रहों का दान मंत्र जाप करे ओये काम ईश्वर चाहे तो ठीक होने वाला है और आदमी भी सहायता करेंगे कर्दश त्रुटें ग्रह इष्टदेव का पूजन कराने से काम मन इच्छा पूर्ण होगा और मिलेगा वंश की वृद्धि होगी जीव लक्ष्मी प्राप्त होगा आराम होगा

११. हे प्रच्छन्न कइस समय के प्रश्न करने का ये मामला है स्वर दुस्वभाव है घर में चमत्कारी हो क्लेश मिटे व्याधाटले जिसका प्रश्न है दोश मिलेगी या न मिलेगी मंगलाचार कद तक होगा लाभ खुशी कब तक होगी ऐसी दशा कब तक रहेगी जीवकी चिंता है बंश की वृद्धि हो आज कल तुम सोचो हो कुछ होय है कुछ दोतीन ग्रहरास पैना किस आरंभ है सो उनका उपाय दान पुन्य जाप कराने से चित्त काम नोर्थ सिद्ध होगा खुशी हो काम पराये आधान है अब तुम चींटीना लजिमा ओतो श्रेष्ठ है भूखों को भोजन दो कार्य सिद्ध होगा दशा उतरने वाली है मनोर्थ पूर्ण होंगे अनेक प्रकार की लाभ की सुरत हो और ये जो ऊपर से फीक दीखें हैं सो सब कांटा सा निकल जायगा दशामध्यम है

१२. इस समय जो आपने प्रश्न किया है
 ऐसे स्वर में ये बात है कि गुप्त चिन्ता १ जीव
 की लालसा बनी रहती धन से ही सारे कार्य
 सिद्ध होते हैं रोजगार में मध्यम लाभ है सो
 भास होगा या नहीं मंगलाचार की सुरत क
 वत कहो जिससे घर में चांदना हो आराम
 हो कब तक दिन कै डे हैं गुप्त लाभ भी होगी
 ये झगड़ा कब तक मिटेगा दिन रात चिन्त में
 चिन्ता छे शरहे है कब तक दिन अच्छे आवेंगे
 ये प्रश्न ब्राह्मण को दही लड्डू मिष्ठान भोज
 न देने से काम हो अपने इष्टद्व का पूजन
 घर में पित्र पीड़ा का उपाय करो उपाय के
 कशने से अब के काम सिद्ध हो इज्जत बढेगी
 सब से जी तो गेश ब्रह्म पीग्रह हान कर रहे हैं
 दिन रात नई नई बातों सोचो हो सब निरफल
 जाती है परन्तु अजाम कुशलता है ॥

१३ इस समय के प्रश्न का ये फल है जीव
 चिंता भविष्यति धनन्यूनं दिने दिने मंग
 लाचार विलम्बस्य पराधीन कृत्य यो राज
 द्वारकं न्यायं रिथं रोकार्य द्रष्टव्यः ग्रह पीडा
 च प्राप्नोति भृगुणा पारिभाषितः मध्यमं द
 शां मध्यम कार्य हो जाते हैं मन की वार्ता
 कब तक पूर्ण होगी मिलेगी या नहीं राज
 मार की डानी है कब तक बृद्धि होगी आज
 कल दिन ना किस हैं घर में चांदना कब
 तक होये काम अब के भी फल होगा जिस
 से वंश की वृद्धि हो तुम्हारी रास पै कई ग्रह
 मध्यम है पत्रा देखो ना किस ग्रह को दान
 मंत्र जा पछाया दान कराने से अब ये मनो
 र्थ सिद्ध होगा काम का बू से बाहर है मा मला
 ईश्वर के आधीन है परन्तु जो बात चित्त में
 और है ये गृह का प्रभाव है अन्त अछला है

१४ हप्रच्छकतुम्हारा प्रश्न जीव की चिंताकाहैकाम पराधीन काबूमेबाहर होगया बहुतरेयत्नकरोहो बहुतेरीबातें सोचाहो संगलाचार खुशीबंशकीब्रद्धि राजद्वाराविद्याकीसिद्धिधनकीजीतश्रेष्ठ दशामेंहोतीहे अबजोतुम्हेयेचिंताऔर लालसा जीवकीहै सो काममेंविलंबहे परंतुमिलेगाऔरहोगापरंतुजतनउपाय सेइच्छापूर्णहोगीघरमेंस्वप्नभी दीखेहै आरामकी सुरतहोगी जीवप्राप्तिहोगी इज्जतकाकामहो संदेहमिटेगा धनका मनोर्थपूर्णहोगा देवीका पूजनकराओ औरअपनेहाथसे घृतखांडचावलचांदी कादानकरोईश्वरचाहेतोउपायकरतेही इच्छापूर्णहोगी औरतुमपरउपकारीहो सत्यवादीहो असत्यकोपसंदनहींकरते

१५. हे प्रच्छन्नचित्तचित्ताभविष्यातिगृ
 इक्लेशनसंशयः धनमानम हानिपीडा
 देहदीर्घतामंगलाचारकंयोगंबंशवृद्धिच
 प्राप्तयेराजद्वारकंन्यायंधनहानिविलंब
 ताप्रश्नकाफलयेहैतरहरे कीवार्तालाभ
 सोचोहोकामकाबूसेबाहरहै दशाकईम
 हीनेमेमध्यमहैन्यूनदशामें धनहानिवि
 षेशव्ययलाभमध्यमचित्ताक्लेशनकमान
 हांतेहैराजद्वारमेंभी काममर्जीकमाफि
 कनहींहांते सोकामकबतकहोगाजाघर
 मेंचंदनाचमत्कारीहोबंशकीइज्जतकी
 वृद्धिहोऔरवोमिले एकजीवमेंचित्तविपे
 शग्रहताहैसोशिवजीकापूजनचींटीनाल
 देनाश्रेष्ठहैऔरअपनेहाथसेगुड़गेंहूँलाल
 वस्त्रलालपुष्पआदिदानकरकेदेईश्वरचा
 हेतोअबकामशीघ्रहोकामनापूर्ण होगी

१६ वे प्रच्छन्नयगुप्तचिंताशरीरेन धनहानी
 च दूश्यते गृहपीडा भविष्यति दूश्यते
 भाग्यमंदता जीवचिंता च प्राप्नोति मंगला
 चारु हर्षकं धननष्टन संदेहो जीवप्रज्ञे च प्रा
 प्ये इत समय दुःसुभावस्वर है इसमें भाग्य
 की वृद्धि वंश की वृद्धि मंगला चार राजद्वार
 में न्याय किसी प्यारे की चिंता विद्या काला
 भरो जगार कत्य पीडा काय तन दुःस्वभाव
 स्वर में इस प्रकार प्रश्न होते हैं सो तीन गृह
 तुम्हारे शरीर सपै आज कलना किस हैं पत्र में
 देखो ना किस हैं या नहीं जरूर हैं इन ना कि
 स गृहों का दान मंत्र जाप कराओ जिससे
 भाग्य की वृद्धि काना लाखुले और उच्च पद
 वी मिले और ये जीव की प्रप्ति के मंगला चा
 र के काम हों और गृह सगई हुई चीज प्राप्ति हों
 अंजाम कुशल है जिसे चाहो सो मिलेगा

१७. हे प्रच्छकतुम्हारा प्रश्न जीवरूप लक्ष्मी का है चिंता दीर्घ है और स्वरदुस्व भाव है प्रश्न दो तरफ़ कैसे हैं एक शैका अलग हो जाना गेजगार मध्यम होना चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है घर में अंधेरा सा है जीव की लालस है जतन भी करे परन्तु ब्रथांग एगुसा चिंता इज्जत का खयाल है और ये खयाल है अब के भी काम हांगारा जद्वार का उच्च पदवी की आशा है अब चिंता इस प्रश्न की है सो काम ईश्वर आधीन है दिन बहुत समय से मध्यम है भ. ग्य उदय होने को होता है फिर रुक जाता है अब पूजन श्री दुर्गा देवी का कराना चाहिये क ई ग्रहरास पे कै डे हैं उनका उपाय कराना चाहिये काम फतह हो कष्ट बाध नष्ट हो लाभ की सूरत अच्छी बनेगी वो मिलेगी

१८. हे प्रच्छन्न दीर्घा चिंता च प्राप्तेति जीव
 प्राप्तिन दृश्यते भयभीत हृदा दृश्य परार्धा
 नोपिकृत्य याराजद्वारं कार्यैर्धनवश्य
 भविष्यति अंतर्कार्यं महासिद्धिभृगुणाप
 रिभाषतः तुमैव हुतदशान्यूनर्था अनेक
 प्रकारके फिक्क जीवचिंता धनका जाना
 गुप्तकेशरहा तुम्हारा चित्त एक जीवमें त
 प्परहैन ईन ईवार्ता लाभ सोचो हो सो व्रथा
 जाती है अवरो जगार की भी सूत ढांगीय
 जो जीव की लालसा है पूर्ण है परंतु बिलंब है
 देर से फल होगा काममें लाभ होगा छाया
 दान गुड़ गेंहूं लाल वस्त्र पुष्प दान से शीघ्र
 मन की कामना पूर्ण होगी और दूधरालाभ
 का कार्य भी सिद्धि होगा कामदेव की उन
 मत्ता में नीच बुद्धि हो जाती है सो ग्रह का प्र
 भाव है अंजाम कुशल भूमि लाभ होगा

१९. हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से
 बाहर है दिन रात विचित्र तरह की वार्ता
 लाभ सोचो हो बन कर काम की आनन्द की
 सुरत मध्यम सी होगई ऐसी दश में गुप्त
 चिंता शत्रु का चित्त में भय साधन का चला
 जाना भिन्न का रूयाल रहता है रोजगार का
 मध्यम होना कष्ट व्याधा हो खोटी दश में
 बहुत बातों का रूयाल होता है तुम पक्षियों
 को अन्न बाजरा भोजन दो श्री बटुक भैरव
 का पूजन करा ओ गे मंत्र जपो उँ ऐं ह्रीं लकीं श्रीं
 श्री विष्णु भगवानं मम अपराध क्षमाय कुरु
 कुरु सर्व विघ्ना विनाशाय मम कामना पूर्ण
 कुरु कुरु स्वाहा मंत्र के कराने से वंश की वृद्धि
 होती है रोजगार श्रेष्ठ होता है जीव की प्राप्ति
 होती है राजद्वार से फतै होती है गई हुई लक्ष्मी
 फिर आती है सर्व कामना सिद्ध होती है

२०. हे प्रच्छक तुम्हारा काम फलैहोगा
 स्वरदाहना चलता है इस समय के प्रश्न
 का ये ह फल है चिंता फिकमिटंगा गई सो
 गई अब राख रही जिसने उत्पन्ना किया है
 देगा वही जीव की प्राप्ति होगी राजद्वार से
 लाभ होगा खुशी होगी मंगलाचार होगा
 एक मित्र में विशेष मन रहे है आधीन रहेगा
 भूमि लाभ होगा दशा बहुत दिन से मध्यम
 था अब दशा बदलने वाली है काम देव की
 प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाती है जब जो
 तुम्हारी रास पै ग्रह मध्यम हैं उनका दान
 निश्चै कर के कराओ काम होता होता रुक
 जाता है शत्रु हानि कराते हैं काम और के
 आधीन है कई आदमियों से मिल कै
 काम होगा अब दशा अच्छी आने वाली
 है ये जो और काम है सो वह भी होगा

२१. हे प्रच्छकप्रश्नजरामध्यममालूम
 होता है पुत्रकी लाभसगर्दरोजगारमध्य
 मदशामें मुशकिलसे होते हैं अर्थात् होता २
 लाभरुकजाता है धनकानुकसानधनहर
 न होता है राजद्वारसे फतै होना मुशकिल हो
 जाता है उच्चपदवी नहीं मिलती जीवकी
 प्यारेकी चिंता हो जाती है जो काम सोचो
 तारभंग हो जाती है गुप्तशत्रुभांजी मार देते
 हैं एकमनोर्थ बहुतदिनसे सोचरक्खा है
 ईश्वरचाहे तंव हो अवतुम इष्टदेव और घरके
 पित्रों निमित्त कुछ जपदान कराओ जिस
 से मनोर्थ सिद्ध हो जिसकी चाहना है वो मिले
 जीवकी प्राप्ति होरोजगार भारी हो राजद्वार
 से फतै हो गर्दचीज मिले मंगलाचार हो
 इतने पूजन नवनेगा कोई कार्य दुरुस्त न हो
 गा काम मध्यम रहेगा अन्तमें कुशल है

२२. हे प्रच्छक अब तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा श्रेष्ठ दशा आने वाली है उत्तम दशा गई चीज का मिलना रोजगार में लाभ अन्न लाभ जीव की प्राप्ति राजद्वार में फतै घर में मंगला कष्ट व्याधानष्ट्यात्रा में लाभ और मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अब तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और वाकी हैं पत्रा देखो उनका जरा उपाय और श्रद्धा से करा दो और श्याम को चींटीना लजबतक बने तब तक दो दशा उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत फिक्र से बीचे सो अब ईश्वर चाहे काम पूर्ण होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ एक जीव में चित्त विशेष कर रहता है सो आनन्द में बीतेगी काम देव की उन भक्तता में बुद्धि न्यून भी हो जाती है

२३. हे प्रच्छक अः क्या फिक्र कर रहा तुम्हें
 खुशखबरी हाने वाली है कई सोंगई अब
 रख रही अब बहुत देगा वही मनोर्थ पूर्ण हों
 मे परन्तु एक फिक्र भार्गवी खे है ऊपर से
 खर्च आब है पास धन विशेष नहीं दीखता
 परन्तु चिंता मत करना काम बड़ा इज्जन के
 साथ बनेगा और कई जगह से लाभ होगा
 करने वाला और है वही फिक्र कर रहा है अब
 विशेष लाभ की सूरत होगी मित्र में चित्त
 बहुत रहना है ब. भो चित्त से प्यार करे है अब
 तुम शोध इस काम की सिद्धि चाहो तो श्री
 गंगाजी के पूजा ह्यण्डी ग्रांठ के जिमाओ
 और सड़ी चावल दही दान करे काम शीघ्र
 फल होगा और गुप्त लाभ होगा घर में चांद
 ना होगा एक काम गुप्त से गुप्त न किस
 बनाया सोईश्वर का ध्यान रखे करो

२४. हे प्रच्छकतुमपर बहुतदिनोंसे दशना किसर्थी नहीं तो निहाल हो जाते लाभ की मूरत में दान पैदा होगई गुप्त शत्रु बरई करे है अब एक और खुशी की बात तुम्हें होने को हो रही है दशना किसमें धन मालका निकल जाना पीडा का घर में बास होना इज्जत का भय होना रोजगार में दान होना हुवा हुवा या मंगलाचार का हट जाना राजद्वार की चिंता दोनी ये सब बात ना कि सदश में होती हैं अब तुम शाम को घृत का दीपक शिवजी के मंदिर में प्रज्वलित करो और जल कालोटा भर के शिवजी को और पाप लको दो और इतवार को ब्राह्मण जिमा ओ कई ग्रह तुम्हारी रास पर ना किस हैं पत्रे में देखो सो ना किस दशका फल न्यून हो जायगा जो मनो काम ना है पूर्ण होगी

२५. हे प्रच्छन्नकअवतुम्हारेखांटे दिनगये
 अच्छे आने वाले हैं अवतक तुमने बहुत
 नाकिसदशा झेली नाकिसदशा में ही
 ऐसे काम होते हैं जो फिकतुम पर हैं बहुत
 नुकसान उठाया लाभ कम रहा पीड़ा रूपी
 क्लेश में धन खर्च और चीज निकल गई
 डज्जत का भय हुआ परन्तु अब अपने इष्ट
 देव का पूजन पितृ पीड़ा का जतन और क्रूर
 ग्रह का दान निश्चय करके कराओ फिर शांति
 और नये लाभ होंगे जीवकी प्राप्ति मित्रसे
 मुलाकात जो है विशेष होगी घर में मंगला
 चार उच्चपदवी प्राप्त होगी ग्रहकी पीड़ा
 नष्ट होगी शत्रुकानाश और ये जो मनकी
 कामना है सो पूर्ण होगी और बड़े रफिक
 जो ऊपर से खर्च के दीखें हैं सो सब आनंद में
 कांटा सानि कल जायगा काम सिद्ध होगा

२६. हे प्रच्छक प्रश्न इस समय का बहुत श्रेष्ठ तुम्हारा दीखता है बुरे दिन गये अच्छे आने वाले थे सो तुम्हारी रास पै दो तीन ग्रह मध्यम आ गये और तुम ने उन का दान जप करा या नहीं इस कारण ऐसे फिक्र चिंता झेली लाभ कम रहा खर्च विशेष है पीडा की चिंता चित्त में भय सा होना काम उम्भाला भका अभी नहीं बना जीव की चिंता है वश की वृद्धि को मंगलाचार होना एक अपना प्यारा है उसी में चित्त बहुत रहता है राजद्वार की चिंता अवछाया दान और चमके की दाल पेला वस्त्र हलदी स्वर्ण दान करा ओ ईश्वर चाह तो मन की कामन पूर्ण होगी उच्च पदवी मिलेगी जीव की प्राप्ति लाभ बढे भूमि से लाभ पीडा नष्ट होगी और राजद्वार से भी काम में फल होगा

२७. हे प्रच्छक प्रश्न मध्यम है अभी तुम्हारी मर्जी सा फिक्र काम होने में देर है कष्ट रूपी रंजकेश चिंता बहुत रही काम होता होता रुक जावे है ये मध्यम दशा का फल है कहीं गवन होता भी ताज्जुब नहीं एक मित्र से प्रीत बहुत है एक शत्रु गुप्त है अब उस का मिलना कठिन है मंगलाचार में देर है एक जीव की भी अब लाषा है अब तुम नवगृह का पूजन दान करो दशा न्यून बदलेगी श्रेष्ठ आवेगी सो सब काम उत्तम होंगे जीव की लाभ गई हुई चीज फिर आवेगी कष्ट बाधा नष्ट होगी उच्यपद वी मिलेगी राजद्वार से काम सिद्ध होगा गुप्त चिंता मिटेगी चित्त में अनेक प्रकार की वार्ता चित्त बन करते हो चित्त की वार्ता चित्त में समा जाती है अब खुशी की वार्ता सुनने में आवेगी

२८. हे प्रच्छन्न जब दशा जीव पै नाकिस
 आता है और ग्रह चौथे आठवें बारहवें हो जा
 ते हैं तब ऐसे काम होने हैं खर्च विशेष लाभ
 कम और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है
 सो आराम मिलेगा और हाथ से निकला
 धन देर से प्राप्त होगा जिस काम को करना
 विचारा हो समझ के करना अभी भाग्य
 उदय होने में किंचित विलम्ब है एक मित्र में
 बहुत मन रहता है सो उस से प्रीत बढ़ेगी और
 मिलेगा नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हा
 रे नाम की रास पै कैड़े हैं उन का पत्रा देख कर
 यत्न कराओ नहीं तो विशेष क्लेश होगा दुख
 हो ग्रहों का यत्न होते ही आराम होगा उच्च
 पद वी होगी काम में फायदा हो एक जगह
 से विशेष माल मिलेगा बिलम्ब से खातर जमा
 रक्खो ईश्वर का भजन करा करो भूलो मत

२६. हे प्रच्छकतुहारी बुद्धिभ्रमैणारहती
 है ईश्वर को सत्य नहीं मानते जिसने इतना
 बड़ा किया है और बराबर रक्षा करी है
 सो वह कहीं चलानहीं गया है बराबर रक्षा
 करेगा उस का भजन करो अन्त में
 आसा पूरण होगी और गर्दसो गर्द अब
 राख रही और वो मिलेगा मौजूद है चिंता
 मत करो आगम की सूरत हो रही है एक
 काम में विशेष लाभ होगा परंतु अब मंगल
 के वर्त और पक्षियों को बाजरा भोजन
 डाल दिया करो बड़ा पुण्य का काम है
 क्रूर ग्रहों का जपदान कराते रहा करो मन
 वांछित फल मिलेगा कार्ज सिद्ध होंगे जो
 बड़े खर्च के काम समझ रखे हैं कांटा सा
 आनन्द में निकल जायगा काम देव की
 उन मत्ता में बुद्धि न्यून हो जाती है

३०. है प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमने जो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत और आराम की सूरत नजर आती है पिछले साल महीने मध्यम रहे स्वर्च विशेष आयदनी न्यून अब भाग्य उदय होगा और काम फल होगा थोड़ा बिलंब है लाभ की सूरत होकर हट जाती है ईश्वर का स्मरण चित्त लगा कर करो और धृत सांभर दान करो अब नये सिर से आनन्द का प्रबन्ध होगा एक काम तुम से न्यून बन गया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुत सी प्राप्त होगी नवीन नवीन वार्ता की समुद्र की तरंग सी चित्त में उठती है

३१. हे प्रच्छक काम तुम्हारे में विलंब है
 काम अभी ठीक न होगा दशा ना किम है
 कई ग्रह ना कि स हैं पंचांग खोल कर देखो
 सोचो हो कुछ हो है कुछ कई बातों की चिंता
 है जीव की धन की मंगलाचार की कष्ट रूपी
 क्लेश की पंगु तुम सतवादी हो सतग बोलने
 को पसंद करते हो झूट से क्रोधित होते हो पर
 ये काम में मन से प्रीत लगा के करते हो किसी
 का बुरा नही चाइते तुम्हें विद्या कम है परंतु
 बुद्धि अकल बडे विद्वानो से विशेष है हर एक
 की बात की झूट मत्य की परिक्षा समझ लो
 हो एक काम न्यून बन गया था सो ईश्वर की
 भक्ति विशेष करो श्री गंगा जी के ५ ब्राह्मण
 खीर खं ड के जिमाओ मन बांछित फल मि
 लेगा लाभ होगा निरपेय डाजे फिक्र नमझ
 रकवा है सब काम आनंद में हो जायगा

३२ हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न शगुण
 इमवक्त बहुत श्रेष्ठ है तुम्हें बिना कारण
 चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न होजाता है
 बुद्धि भ्रमण होजाती है गयासो गया फिर
 आवेगा मिलेगा क्या मिलेगा आराम
 मिलेगा धन मिलेगा मंगलाचार होगा
 पीडा कानाश होगी जीव को खुशी होगी
 अकस्मात् खुशखबरी होगी अपने इष्ट
 देव पित्रदेवता के निमित्त वस्त्र मिष्टान्न
 कच्चा दूध मावश्या को पिलाते रह करो
 रोजगार बढेगा उच्च पदवी पाओगे
 एक जीव का ध्यान मित्र के ध्यान नो चिन्त
 बहुतरहता है तुम्हें विद्या मध्यम है परंतु
 अकल बुद्धि तेज है किसी का बुरा नही चा
 हते सत्यवार्ता को पसन्द करते हो स्वर्च है
 अंजाम कुशल है राजद्वार से अन्त फते है

३३हेप्रच्छक येजोतुमने प्रश्नकियाहै
जोहोगयासोहोगयाअबखुशीकीवार्ता
होनेवालिहैखोटेदिनगयेश्रेष्ठआनेवाले
हैआरामहोगाकारजफतैहोगाजिसकी
चाहनाहैमिलेगाऔरयेजोचित्तमेंकाम
बिचाराहैदेरसेहोगादिनतुमकोबहुत
दिनोंसेमध्यमहैमर्जिकेमाफिकलाभ
नहींहैनष्टदशमेंरजक्लेशपीड़ागुप्तचिंता
शत्रुताहोतीहैमोअपनीरासपैजोदोतीन
ग्रहनाकिसहैदानमंत्रजपाकरोतबघर
मेंआनन्दमंगलाचारजीवकीप्राप्ति
यात्रासेलाभकामफतैहोंगेगुप्तप्राप्ति
होगीतुम्हारेशरीरपैब्रणयानीफोडे
फुंसीकानिशानहैआलस्यरहताहै
नईनईबातकाचितवनकरतेहो

३४ हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिसाफिक्रसं गुजरे और खर्च विशेषलाभ मध्यम सोअवप्राप्तिहोगी जीवकालाभहोगा व्याधारंजनष्टहोगे घरमें खुशीहोगीचित्तकीचिंताचित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसीनईनई उठतीहैंसोब्रथाजातीहैंएकजीवमेंचित्त बहुतरहताहै अबईश्वर चाहेतो कहींमे खुशीकी बातसुनोगेउच्चपदवी प्राप्तहोगी नाकिसग्रहोंकादान औरसर्वेश्वराम शिवजीका भजनकरेकरो और येजो प्रश्नकिया है वो काम भी फतैहोगा मिलेगा फिर गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से बहर है सिद्ध होया ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

३५ हे प्रच्छकतुम्हारा कार्यसिद्ध होगा
 प्रथम दशा न्यून थीं अब दशा श्रेष्ठ
 आनेवाला है जीवकी चिंता और लाभ
 का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा
 होता है और ये जो अब फिक्र है खर्च सो
 दूर होयगा आराम गुप्त वो भी मिलेगा फतै
 होगा कष्ट नष्ट होगा कई ग्रह नामकी
 रास परना किस है सो उन ग्रहों का उपाय
 बिधि पूर्वक पंडित से कराओ बिना दान के
 कराये कार्यसिद्ध देर से होगा इस कारण चा
 वल मिष्टान्न स्वेत वस्त्र रज्जनित अर्थात् श्र
 द्धा प्रमाण चांदी दान का करना बहुत श्रेष्ठ
 है मनकी कामना पूर्ण होगी अचानक ला
 भकी सूरत होगी चित्त स्थिर करके किसी
 काल ईश्वर का भजन करा करो प्रश्न श्रेष्ठ
 है अंजाम कुशल है तीर्थयात्रा श्रेष्ठ है

३६ प्रच्छकडसममयकेप्रश्नकायेफल
 है कार्य आधीनसेव। हर अथ। तू काम का वृ
 सेवा हर चिंता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त करें
 हैं परंतु उनमें कुछ हो नहीं सक्ता १ जीवमें
 चित्त बहुत रहता है दशामध्यमके कारण
 अनेक प्रकार की हानि वाता लापसो चोड़ो
 समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का
 चित्त बन होकर निर्फल होता है कई फिक्र
 भारी लगे हुवे जीव की प्रसिद्धी फते और
 चंगा होगा और ये जो अब चिंता है सब दूर
 हो पीत दान करो चने की दान हल दीपे ला
 वस्त्र पेले पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्त चिंता
 दूर होगी कार्य फते होगा मन वांछित फल
 प्राप्त होगा दशान्यूनके कारण फिक्र चिंता
 गृहमें छंश होता है अब दश श्रेष्ठ आने वा
 ली है ये कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

३७ प्रच्छकतुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्ट का है खर्च विशेष जीव की लालसा जीव चिंता तरह २ उद्वेग चित्त स्थिर नहीं काम का बूझ बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहुत फिक्र है जब दशमध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगा परंतु पापग्रहों का पूजन विधि पूर्वक बटक भैरव का मंत्र भी जपावाओ [मंत्र] ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भव्याय आपद्द्वारणाय सर्वविघ्ननिवारणाय मरक्षा कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से मनो कामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूर होते हैं नई २ वार्ता का चितवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

३८ हे प्रच्छक कामना पूर्ण होगी खुशी की वार्ता होने वाली है मिलेगा मार्ज के माफिक काम हो चित्त उस विना व्याकुल सार होता है दशान्यून के कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च जीव का दुख काम दूसरे के काबू में होना और दोतीन ग्रह तुम्हारी रास पै कै डे हैं मध्यम हैं पंचांग में देखो उन मध्यम गृहों का पूजन दान मंत्र स्थिर चित्त करके कराओ कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और ये जो फिक्र है सो दूर होगा और कई फिक्र खर्च के आवें हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीव की प्राप्ति होगी परन्तु विलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अंजाम अच्छा दीखें कार्य में भी लाभ होगा शिव जी का पूजन नित्य किया करो

३६ इस समय के प्रश्न का फल यह है कि का
मठी के बैठे गायन बैठे गाइ जन का भय
हो जाता है ऐसी दशा में गवन भी होता है
गुप्त चिन्ता रहे हैं कभी चित्त में कुछ आता है
कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्चा विशेष
पड़ता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आ
राम होगा सां अब न्यून दशावी चने वाली
है और श्रेष्ठ आने वाली है परन्तु काम में देर
है इष्ट देव का पूजन करना चाहिये पित्रों के
निमित्त मिष्टान्न वस्त्र कच्चा दूध पीपल को
जल देना श्रेष्ठ है कई माहिने से भग्य की ही
नतायानी मध्यम है पूजन करने से धन की
प्राप्ति जीव का मिलना कष्ट रूपी रज का
दूर होना ये जो अब बहुत चिन्ता है काम
जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम
का वृत्त बाहर होगया दशा मध्यम है

४० हे प्रच्छलतुम्हारी रासपै आजकल
 कई ग्रह न कि सहे पंचांग खोलकर देखो
 जब ऐसे ग्रह रासपै आते है लाभ कम होती
 है शत्रु उत्पन्न होते मित्र व प्यारों से जुदाई
 होती है कष्ट रंज होते है आमदनी होती र
 रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझो अधूरा
 होता है एक जीव लालसा आस लगी रहे है
 व्यैदीर्घ लाभ मध्यम हो काम होने को हो
 फिर तार भंग हो जाई सो अब मध्यम ग्रहों
 के दान जाप कराओ आप भी ये मंत्र जपो
 ओं ऐ ह्रीं क्लीं श्री वासुदेवाय नमः ववटुक भैर
 वाय आपदुद्धारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा
 दान मंत्र जाप करने मे ये जो तुम्हारे मन की
 कामना है पूर्ण होगी प्राप्ति होगी कष्ट दूर हो
 पुत्रों कालाभरांज से फतै मित्र से प्रीति विशेष
 इतने उपाय न बने गा दशा मध्यम रहेगी

४१. हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है जो हो गया सो हो गया अब खुशी की बात होने वाली है खांटे दिन गये श्रेष्ठ आने वाले हैं आराम होकर जफत हो गया जिसकी चाहना है मिलेगा और ये जो चित्त में काम विचार है देर से होगा दिन तुमको बहुत दिनों से मध्यम हैं मर्जी के माफिक लाभ नहीं है नष्ट दश में रजक शपी डागुप्त चिंता शक्ता होती है सो अपनी रास पै जो दांती न प्रहना किस हैं दान मंत्र जाप करो तब घर में आनन्द मंगलाचार जीव की साप्ति यत्रा से लाभ काम फतै होंगे गुप्त प्राप्ति होगी तुम्हारे शरीर पै व्रण ग्रानी फोड़े फुंसी का निशान है आलस्य रहता है नई नई बात का चिंतन करते हो

४२. हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फिक्र से गुजरे और खर्च विशेष लाभमध्यम सो अब प्राप्ति होगी जीवका लाभ होगा व्याधायक रंजन दृष्ट होगा घर में खुशी होगी चित्त की चित्त चित्त में समा जाती है समुद्र की तरंग सी नई नई उठती है सो वथा जाती है एक जीव में चित्त बहुतरहता है अब ईश्वर चाहे तो कहीं से खुशी की बात सुनोगे उच्च पदवी प्राप्ति होगी नाकिस ग्रहों का दान और सुब्रह्मण्य शिवजी का भजन करा करे और ये जो प्रश्न किया है वो काम भी फल होगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम कावू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वर का भरोसा करे काम फल होगा

४३. हे प्रच्छक तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ठ आनेवाली है जीवकी चिंता और लाभ का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा होता है और ये जो अब फिक्र है खर्च सो दूर होगा आराम गुप्तवो भी मिलेगा फतै होगा कष्ट नष्ट होगा कई ग्रह नाम की रास पर नाकिस है सो उन ग्रहों का उपाय विधि पूर्वक पंडित से कराओ बिना दान के कराये कार्य सिद्ध देर से होगा इस कारण चावल मिष्टान्न स्वेत वस्त्र रजानित अर्थात् श्रद्धा प्रमाण चांदा दान का करना बहुत श्रेष्ठ है मन की कामना पूर्ण होगी अचानक लाभ की सूरत होगी चित्त स्थिर करके किसी काल ईश्वर का भजन करा करो प्रश्न श्रेष्ठ है अजाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्ठ है

४४, हे प्रच्छेदक इस समय के प्रश्न का ये फल है कार्य आधीन सेवाहर अर्थात् काम का बू सेवाहर चिंता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त करे है परंतु उनसे कुछ हो नहीं सक्ता १ जीव में चित्त बहुत रदता है दशामध्यम के कारण अनेक प्रकार की दान वार्तालाप सोचो हो समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का चित्त बन हो कर निर्फल होता है कई फिक भारी लगे हुवे जीव की प्राप्ति होगी फित और चंगा होगा और ये जो अब चिंता है सब दूर हो पीत दान करो चने की दाल हलदी पेल्ला वस्त्र पेल्ले पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्त चिंता दूर होगी कार्य फते होगा मन बांछित फल प्राप्त होगा दशान्यून के कारण फिक चिंता गह में क्लेश होता है अब दश श्रेष्ठ आने वाली है ये कार्य हो कर नवीन कृत्य करोगे ॥

४५. हे प्रच्छन्नतुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्ट का है स्वर्च विशेष जीव की लालसा जीव चिंता तरह उदवेग चित्त स्थिर नहीं काम का वृत्त बाहर है दूसरे आदामियों को भी बहुत फिक्र है जब दशामध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगी परंतु पाप गृहों का पूजन विधि पूर्वक बटुक भैरव का मंत्र भी जपवाओ (मंत्र) ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्री बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय सर्वविघ्ननिवारणाय मरक्षा कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से मनो कामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा स्वर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत तरहता है लाभ अधूरे होते हैं नई रवार्ता का चित्त बन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

४६. हिप्रच्छक कामना पूर्ण होगी खुशी की वार्ता होने वाला है मिलेगा मज्जा के माफिक काम हो चित्त उस बिना व्याकुल सा महना है दशा न्यून के कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च जीव का दुख काम दूसरे के काबू में होना और दो तीन गृह तुम्हारी रास पै कै डे हैं मध्यम है पंचाग में देखो उन मध्यम ग्रहों का पूजन दान मंत्र स्थिर रचित करके कराओ कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और ये जो फिक्र है सो दूर होगा और कई फिक्र खर्च के आवैं हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीव की प्राप्ति होगी परंतु विलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अंजाम अच्छा दीखे है कार्य में भी लाभ होगा शिवजी का पूजन नित्य किया करो

४७, इस समय के प्रश्न का फल ये है कि का
मठा क बैठेगा या न बैठेगा इज्जत का भय
हो जाता है ऐसी दशा में गवर्न भी होता है
गुप्त चिन्ता रहे है कभी चिन्त में कुछ आता है
कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्चा विशेष
पड़ता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आ
राम होगा सो अव न्यून दशा धी चने वाली
है और श्रेष्ठ आने वाली है परन्तु काम में देर
है इष्ट देव का पूजन कराना चाहिये पित्रों के
निमित्त मिष्टान्न वस्त्र कच्चा दूध पीपल कौ
जल देना श्रेष्ठ है कई महीने से भाग्य की ही
न ता यानी मध्यम है पूजन करने से धन का
प्राप्त जीव कामिलना कष्ट रूप रंज का
दूर होना ये जो अब बहुत चिन्ता है काम
जरा देर से मज्जी के माफिक होगा काम
कब से बाहर होगया दशा मध्यम है

४८. हे प्रच्छकतुम्हारी रासपै आज कल
 कई ग्रह ना किस हैं पंचांग खोल कर देखो
 जब ऐसे ग्रह रासपै आते हैं लाभ कम होती
 है शत्रु उत्पन्न होते मित्र व प्यारों से जुदाई
 होती है कष्ट रंज होते हैं आमदनी होती र
 रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझो अधूरा
 होता है एक जीव लालसा आस लगी रहे है
 व्यैदी ध लाभ मध्यम हो काम होने को हो
 फिर तार भंग हो जा है सो अब मध्यम ग्रहों
 के दान जाप कराओ आप भी ये मंत्र जपो
 ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वासुदेवाय नमः वटुक भैर
 वाय आपदुद्धारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा
 दान मंत्र जाप करने से ये जातुम्हारे मन की
 कामना है पूर्ण होगी प्राप्ति होगी कष्ट दूर हों
 पुत्रों की लाभ राज से फने मित्र से प्रीति विंश
 इतने उपाय से नरेगा दशा मध्यम रहेगी

४६. हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है
 अब दशाश्रेष्ठ आने वाला है कामना पूर्ण हो
 गी जो काम चिंत में धारण करा है सो मिले
 गा चिंता दूर होगी काम फलें होंगे मित्रों से
 प्रीत और कष्ट पीड़ा नष्ट होगी जो विचार है
 काम ठीक बैठेंगे दशा बहुत दिनों में मध्यम
 था व्यैविशेप हुआ जीवकी प्राप्ति होगी रिण
 की न्यूनता होय प्रश्न श्रेष्ठ है उद्योग व उपाय
 पहले तुमने बहुत करे परानिर्फल गये काम
 का बूसे बाहर है पर अब ईश्वर आनन्द खुश
 खबरों की बात करेंगे गुप्त लाभ होये जो प्रश्न
 विचार है इस के वास्ते श्री देवी दुर्गा लक्ष्मी
 का पूजन कराओ चावल चांदी से तब ख
 श्वेत फूल का दान कराओ कई ग्रह मध्यम
 हैं सो उपाय करने से शीघ्र मन की कामना
 पूर्ण होगी एक जीव का ध्यान रहना है

पूँछें प्रच्छक काम का बूम बाहर है और धन का व्यैविशेप है अकस्मात ये मामला है सो जीव की चिन्ता है और आदमी को भी चिन्ता बहुत है इज्जत का खयाल है बड़े खर्च दीखे हैं और तुम पर उपकारि सत्यवार्ता को पसंद करो हो छलछिद्र के काम को पसंद नहीं करते तुम्हारा प्रश्न जीव और धन का है और इज्जत का भय होता है अनेक प्रकार की वार्ता सोचो हो निर्फल जाती है पता नहीं लगता जतन भी करे अवनवग्रहों का दान मंत्र जाप कराओ ये काम ईश्वर चाहे तो ठीक होने वाला है और आदमी भी सहायता करेंगे कई शत्रु हैं ग्रह इष्टदेव का पूजन कराने से काम मन इच्छा पूर्ण होगा और मिलेगा वंश की वृद्धि होगी जीव लक्ष्मी प्राप्त होगा आराम होगा

५१. हे प्रच्छन्न कइस समय के प्रश्न करने का
 ये मामला है स्वरदुस्वभाव है घर में चमत्का
 री हो ह्लेश मिटे व्याधाटले जिसका प्रश्न है
 वो शै मिलेगी यान मिलेगी मंगलाचार कद
 तक होगा लाभ खुशी कब तक होगी ऐसी
 दशा कब तक रहेगी जीवकी चिंता है वंश
 की वृद्धि हो आज कल तुम सोचो हो कुछ
 हांय है कुछ दोतीन ग्रहरास पैना किस आ
 रं हैं सां उनका उपाय दान पुन्य जाप करा
 ने से चित्त कामनार्थ सिद्ध होगा खुशी हो
 काम पराये आधीन है अब तुम चींटी नाल
 जिमाओ तो श्रेष्ठ है भूखों को भोजन दो का
 र्य सिद्ध होगा दशा उतरने वाली है मनार्थ
 पूर्ण होंगे अनेक प्रकार की लाभ की सुरत हो
 और ये जो ऊपर से फीक दीखें हैं सो सब
 कांटा सा निकल जायगा दशामध्यम है

५२. इस समय जो आपने प्रश्न किया है
 ऐसे स्वर में ये बातें हैं कि गुप्त चिन्ता १ जीव
 की लाल मायनी रहती धन से ही सारं कार्य
 सिद्ध होते हैं रोजगार में मध्यम लाभ है सो
 प्राप्त होगी यानहीं मंगलाचार की सुरत क
 वत कहो जिससे घर में चांदना हो आराम
 हो कबत कदिन कै डे हैं गुप्त लाभ भी होगी
 ये झगड़ा कबत कदिन रात चिन्त में
 चिन्ता छे शरहे है कबत कदिन अच्छे आवेंगे
 ये प्रश्न ब्राह्मण को देही लड्डू मिष्ठान भोज
 न देने मे काम हो अपने इष्ट देव का पूजन
 घर में पित्र पीड़ा का उपाय करो उपाय के
 कराने से अब के काम सिद्ध होइ जत बढेगी
 सब से जीतो गेश बुरूपी ग्रह हान कर रहे हैं
 दिन रात नई नई बातें सोचो हो सब निरफल
 जाती है परन्तु अंजाम कुशलता है ॥

५३ इस समय के प्रश्न का यह फल है जीव
 चिंता भविष्यति धनन्यूनं दिने दिने मंग
 लाचार विलम्बस्य पराधीन कृत्ययो राज
 द्वारकन्यायं रिथरो कार्यद्रष्टव्यः ग्रहपीडा
 च प्राप्नोति भृगुणा पारिभाषितः मध्यमद
 शाभे मध्यम कार्य हो जाते हैं मन की वार्ता
 कब तक पूर्ण होगी मिलेगी या नहीं रोज
 गार की हाना है कब तक बढ़ि होगी आज
 कल दिन ना किस हैं घर में चांदना कब
 तक होये काम अब के भी फल होगा जिस
 से वंश की वृद्धि हो तुम्हारी रास पै कई ग्रह
 मध्यम है पत्रा देखो ना किस ग्रहों का दान
 मंत्र जा पछाया दान कराने से अब ये मनो
 र्थ सिद्ध होगा काम का बू से बाहर है मामला
 ईश्वर के आधीन है परन्तु जो बात चित्त में
 और है ये गृह का प्रभाव है अन्त अच्छा है

५४ हंप्रच्छकतुम्हारा प्रश्न जीव की
 चिंताकाहै काम पराधीन का बसेवाहर
 होगया बहुतरेयत्नकरोहो बहुतेरी बातें
 सोचाहो मंगलाचार खुशी बंशकी वृद्धि
 गजद्वारा विद्याकी सिद्धि धनकी जीत श्रेष्ठ
 दशामें होती है अब जो तुम्हें ये चिंता और
 लालसा जीवकी है सो काममें विलंब है
 परंतु मिलेगा और होगा परंतु जतन उपाय
 से इच्छा पूर्ण होगी घरमें स्वप्न भी दीखे है
 आरामकी सुरत होगी जीव प्राप्ति होगी
 इज्जत का काम हो संदेह मिटेगा धन का
 मनोर्थ पूर्ण होगा देवी का पूजन कराओ
 और अपने हाथ से घृत खांड चावल चांदी
 का दान करो ईश्वर चाहे तो उपाय करते ही
 इच्छा पूर्ण होगी और तुम पर उपकारी हो
 सत्यवादी हो असत्य को पसंद नही करते

५५. हे प्रच्छकचित्तचित्ताभविष्यातिगृ
हक्लेशनसंशयः धनमानमहानिपीडा
देहदीर्घतामंगलाचारकंयोगंबंशवृद्धिच
प्राप्तयेराजद्वारकंन्यायंधनहानिविलंब
ताप्रश्नकाफलयैहेतरह२ कीवार्तालाभ
सोचोहोकामकाबूसेवाहरहै दशाकईम
हीनेभेमध्यमहैन्यूनदशामें धनहानिवि
षेशव्ययलाभमध्यमचित्ताक्लेशनुक्लेशान
होतेहैंराजद्वारमेंभी काममर्जीकेंमाफ़ि
कनहींहोतेसोकामकवतकहोगाजोधर
मेंचंदनाचमत्कारीहोबंशकीइज्जतकी
वृद्धिहोऔरवोमिलेएकजीवमेंचित्तविषे
शगहताहैसोशिवजीकापूजनचींटीनाल
देनाश्रेष्ठहैऔरअपनेहाथसेगुडगेंदुलाल
वस्त्रलालपुष्पआदिदानकरकेदेईश्वरचा
हेतोअबकामशीघ्रहोकामनापूर्ण होगी

५६ हे प्रच्छयगुप्त चिंताशरीरेन धनदानी
 च दूश्यते गृहपीडा भविष्यति दूश्यते
 भाग्यमंदता जीवचिंता च प्राप्नोति मंगला
 चारुहर्षकं धननष्टनसदेहो जीवप्रश्ने च प्रा
 प्तये इस समय दुःसुभाव स्वर है इसमें भाग्य
 की वृद्धि वंश की वृद्धि मंगला चार राजद्वार
 में न्याय किसी प्यारे की चिंता विद्या काला
 भरो जगार कृत्य पीडा का यत्न दुःस्वभाव
 स्वर में इस प्रकार प्रश्न होते हैं सो तीन गृह
 तुम्हारे शरीर सपै आज कलना किस हैं पत्र में
 देखो ना किस हैं यानहीं जरूर हैं इन ना कि
 स गृहों का दान मंत्र जाप कराओ जिससे
 भाग्य की वृद्धि काना लाखुले और उच्च पद
 वी मिले और ये जीव की प्राप्ति के मंगला चा
 र के काम हों और गसाई हुई चीज प्राप्ति हो
 अंजाम कुशल है जिसे चाहो सो मिलेगा

५७. हे प्रच्छकतुम्हारा प्रश्न जीवरूप लक्ष्मी का है चिंता दीर्घ है और स्वरदुस्वभाव है प्रश्न दो तरफ़ कै से हैं एक शैका अलग हो जाना गेजगार मध्यम होना चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है घर में अंधेरा सा है जीव की लालसा है जतन भी करे परन्तु ब्रथाग एगुसा चिंता इज्जत का ख्याल है और ये ख्याल है अब के भी काम हांगाराज द्वार का उच्यपदवी की अशा है अब चिंता इस प्रश्न की है सो काम ईश्वर आधीन है दिन बहुत समय से मध्यम है भाग्य उदय होने को होता है फिर रुक जाता है अब पूजन श्री दुर्गा देवी का कराना चाहिये कई ग्रहरास पे कै डे हैं उनका उपाय कराना चाहिये काम फल हो कष्ट बाध नष्ट हो लाभ की सुरत अच्छी बनेगी वो मिलेगी

५८. हे प्रच्छंक दीर्घ चिंता च प्राप्तोति जीव
 प्राप्तिन दृश्यते भयभीत हृदा दृश्य पराधी
 नोपि क्रत्यया राजद्वार कं कार्य धन वश्य
 भविष्यति अंतर्कार्य महासिद्धि भूगुणाप
 रिभाषतः तु मपैव हुन दशान्यूनथी अनेक
 प्रकारकोपि जीवचिंता धनका जाना
 गुप्तक्लेशरहां तुम्हारा चित्त एक जीवमें त
 त्परहैन ईन ईवा ताला भसो चोहो सो ब्रथा
 जाती है अबरो जगार की भी सूत होगी ये
 जो जीव की लालसा है पूर्ण है परंतु बिलंब है
 देर से फल होगा काममें लाभ होगा छाया
 दान गुड़ गेंहूं लाल वस्त्र मुवर्ण दान में शीघ्र
 मन की कामना पूर्ण होगी और दुःख मरालाभ
 का कार्य भी सिद्धि होगा कामदेव की उन
 मत्ता में नीच बुद्धि हो जाती है सो ग्रह का प्र
 भाव है अंजाम कुशल भूमि लाभ होगा

५९. हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से
 बाहर है दिन रात विचित्र तरहर की वार्ता
 लाभ सोचो हो बन कर काम की आनन्द की
 मूरत मध्यम सी होगई ऐसी दशामें गुप्त
 चिंता शत्रु का चित्त में भय साधन का चला
 जाना मित्र का खयाल रहता है रोजगार का
 मध्यम होना कष्ट व्याधा हो खोटी दशामें
 बहुत बातों का खयाल होता है तुम पक्षियों
 को अन्न बाजरा भोजन दो श्री बटुक भैरव
 का पूजन करा ओये मंत्र जपो उँ ऐं ह्रीं लीं श्रीं
 श्रीं बिष्णु भगवान मम अपराध क्षमाय कुरु
 कुरु सर्व विघ्ना विनाशाय मम कामना पूर्ण
 कुरु कुरु स्वाहा मंत्र के कराने से वंश की वृद्धि
 होती है रोजगार श्रेष्ठ होता है जीव की प्राप्ति
 होती है राजद्वार से फतै होती है गर्ई हुई लक्ष्मी
 फिर आती है सर्व कामना सिद्ध होती है

६०. हे प्रच्छक तुम्हारा काम फलैहंगा
 स्वरदाहना चलता है इस समय के प्रश्न
 का ये हफ्ते है चिंता फिक्र मिटेगा गई सो
 गई अब राखरही जिसने उत्पन्ना किया है
 देगा वही जीव की प्राप्ति होगी राजद्वार से
 लाभ होगा खुशी होगी मंगलाचार होगा
 एक मित्र में विशेष मन रहे है आधीन रहेगा
 भूमि लाभ होगा दशा बहुत दिने समध्यम
 था अब दशा बदलने वाली है काम देव की
 प्रबलता में न्यून बुद्धि होजाती है जब जो
 तुम्हारी रास पै ग्रह मध्यम हैं उनका दान
 निश्चै करके कराओ काम होता होता रुक
 जाता है शत्रु हानि कराते हैं काम और के
 आधीन है कई आदमियों से मिल कै
 काम होगा अब दशा अच्छी आने वाली
 है ये जो और काम हे सो वह भी होगा

६१. हे प्रच्छकप्रश्नजरामध्यममालूम
 होता है पुत्र की लाभ सगाई रोजगार मध्य
 म दश में मुशकिल से होते हैं अर्थात् होता र
 लाभ रुक जाता है धन कानु वसान धन हर
 न होता है राजद्वार से फतै होना मुशकल हो
 जाता है उच्च पद वी नही मिलती जीव की
 प्यारे की चिंता हो जाती है जो काम सोचो
 तार भंग हो जाती है गुप्त शत्रु भांजी मार देते
 हैं एक मनोर्थ बहुत दिन से सोच रक्खा है
 ईश्वर चाहे तब हो अवतु म इष्ट देव और घर के
 पित्रों निमित्त कुछ जपदान कराओ जिस
 से मनोर्थ सिद्ध हो जिसकी चाहना है वो मिले
 जीव की प्राप्ति हो रोजगार भारी हो राजद्वार
 से फतै हो गई चीज मिले मंगलाचार हो
 इतने पूजन नवने गा कोई कार्य दुरुस्त न हो
 गा काम मध्यम रहेगा अन्त में कुशल है

६२. हे प्रच्छक अब तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा श्रेष्ठ दशा आने वाली है उत्तम दशा गई वीज का मिलना रोजगार में लाभ अन्न मेलाभ जीव की प्राप्ति राजद्वार में फते घर में मंगला कष्ट व्याधानष्टयात्रा में लाभ और मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अब तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और वार्क हैं पत्रा देखो उनका जरा उपाय और श्रद्धा से करा दो और श्याम को चींटीना लजबतक बनेतबतक दो दशा उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत फिकसे वीचे सो अब ईश्वर चाहे काम पूर्ण होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ एक जीव में चित्त विशेष कर रहता है सो आनन्द में बीतेगी काम देव की उन मत्तता में बुद्धि न्यून भी हो जाती है

६३. हे प्रचलक अदकग फिक्र करो हा तुम्हें
 खुशखबरी हानेवाली है गई सो गई अब
 राखरही अब बहुत देगा वही मनोर्थ पूर्ण हों
 मे परन्तु एक फिक्र भारी दीखे है ऊपर से
 खर्च आब है पास धन विशेष नहीं दीखता
 परंतु चिंता मत करना काम बड़ा है जेन के
 साथ बनेगा और कई जगह संलभ होगा
 करनेवाला और है वही फिक्र कर रहा है अब
 विशेष लक्ष्मी की सुरत होगी मित्र में चित्त
 बहुत रहना है वे भी चित्त से प्यार कर रहे हैं अब
 तुम शोध इस काम की सिद्धि चाहो तो श्री
 गंगाजी के पूजा ब्राह्मण खीर खांड के जिमाओ
 और सही चावल दही दान करो काम शीघ्र
 फल होगा और गुप्त लाभ होगा घर में चांद
 ना होगा एक काम गुप्त से गुप्त न किस
 बनाया सोई श्वर का ध्यान रखे करो

६४. हे प्रच्छकतुमपर बहुतदिनोंसे दश
 नाकिस थी नहीं तो निहाल हो जाते लाभ
 का मूरत में हान पैदा होगई गुप्त शत्रु बुराई
 करे है अब एक और खुशी की बात तुम्हें होने
 को हो रही है दशनाकिस में धन मालका
 निकल जाना पीडा का घर में बास होना
 इज्जत का भय होना रोजगार में हान हो
 ना हुवा हुवा या मंगलाचार का हट जाना
 राजद्वार की चिंता होनी ये सब बात नाकि
 स दश में होती हैं अब तुम शाम को घृत का
 दीपक शिवजी के मद्र में प्रज्वलित करो
 और जल का लोटा भर के शिवजी को और
 पापल को दो और इतवार को ब्राह्मण जि
 मा ओ क ई ग्रह तुम्हारी रास पर नाकिस हैं
 पत्रे में देखो सो नाकि म दश का फल न्यून
 हो जायगा जो मनो काम ना है पूर्ण होगी

६५. हे प्रच्छन्नक अवतुम्हारे खोटे दिन गये
 अच्छे आने वाले हैं अवतक तुमने बहुत
 नाकिस दशा झेली नाकिस दशा में ही
 ऐसै काम होते हैं जो फिकतुम पर हैं बहुत
 नुकसान उठाया लाभ कम रहा पीड़ा रूपी
 क्लेश में धन खर्च और चीज निकल गई
 इज्जत का भय हुआ परन्तु अब अपने इष्ट
 देव का पूजन पितृ पीड़ा का जतन और क्रूर
 ग्रह का दान निश्चय कर के कराओ फिर शांति
 और नये लाभ होंगे जीवकी प्राप्ति मित्र से
 मुलाकात जो है विशेष होगी घर में मंगला
 चार उच्चपदवी प्राप्त होगी ग्रहकी पीड़ा
 नष्ट होगी शत्रुका नाश और ये जो मनकी
 कामना है सो पूर्ण होगी और वड़े रफिक
 जो ऊपर से खर्च के दाख हैं सो सब आनंद में
 कांटा सा निकल जायगा काम सिद्ध होगा

६६. हे प्रच्छक प्रश्न इस समय का बहुत श्रेष्ठ तुम्हारा दीखता है बुरे दिन गये अच्छे आने वाले थे सो तुम्हारा रास पै दो तीन ग्रह मध्यम आ गये और तुम ने उन का दान जप कराया नहीं इस कारण ऐसे फिकर चिंता झेली लाभ कम रहा खर्च विशेष है पीडा की चिंता चित्त में भयसा होना काम उम्हारा भका अभी नहीं बना जीव की चिंता है वश की वृद्धि को मंगलाचार होना एक अपना प्यारा है उसी में चित्त बहुत रहता है राजद्वार की चिंता अवछाया दान और चने की दाल पेलावस्त्र हलदी स्वर्ण दान कराओ ईश्वर चाहे तो मन की कामना पूर्ण होगी उच्यपद वी मिलेगी जीव की प्राप्ति लाभ बढे भूमि से लाभ पीडा नष्ट होगी और राजद्वार से भी काम में फल रह होगा

६७. हे प्रचलक प्रश्न मध्यम है अभी तुम्हारी मर्जी माफिक काम होने में देर है कष्टरूपी रंजकेश चिंता बहुत रही काम होता होता रुक जावे है ये मध्यम दशा का फल है कहीं गवन होता भी ताज्जुब नहीं एक मित्र से प्रीत बहुत है एक शत्रु गुप्त है अब उस का मिलना कठिन है मंगलाचार में देर है एक जीव की भी अवलाषा है अब तुम नवगृह का पूजन दान करो दशा न्यून बदलेगी श्रेष्ठ आवेगी सो सब काम उत्तम होंगे जीव का लाभ गई हुई चीज फिर आवेगी कष्ट बाधा नष्ट होगी उच्यपद वी मिलेगी राजद्वार से काम सिद्ध होगा गुप्त चिंता मिटेगी चित्त में अनेक प्रकार की वार्ता चित्त बन करते हो चित्त की वार्ता चित्त में समा जाती है अब खुशी की वार्ता सुनने में आवेंगी

६८. हे प्रच्छन्न जब दशाजीव पै नाकिस
 आता है और ग्रह चौथे आठवें बारहवें हो जा
 ते हैं तब ऐसे काम होने हैं स्वर्च विशेष लाभ
 कम और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है
 सो आराम मिलेगा और हाथ से निकला
 धन देर से प्राप्त होगा जिस काम को करना
 विचारा हो समझ के करना अभी भाग्य
 उदय होने में किंचित विलम्ब है एक मित्र में
 बहुत मन रहता है सो उस से प्रीत बढ़ेगी और
 मिलेगा नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हा
 रे नाम की रास पै कैडे हैं उन का पत्रा देख कर
 यत्न करा ओ नहीं तो विशेष क्लेश होगा दुख
 हो ग्रहों का यत्न होते ही आराम होगा उच्च
 पद वी होगी काम में फायदा हो एक जगह
 से विशेष माल मिलेगा बिलम्ब से खातर जमा
 रखो ईश्वर का भजन करा करो भूली मत

६६. हे प्रच्छकतुह्यारी बुद्धि भ्रमै गारहती
 हे ईश्वर को सत्य नहीं मानते जिसने इतना
 बड़ा किया है और बराबर रक्षा करी है
 सो वह कहीं चलानहीं गया है बराबर रक्षा
 करेगा उस का भजन करो अन्त में
 आसा पूरण होगी और गर्दसो गर्द अब
 राख रही और वो मिलेगा मौजूद है चिंता
 मत करो आशामकी सुरत हो रही है एक
 काम में विशेष लाभ होगा परंतु अवमंगल
 के वर्त और पक्षियों को बाजरा भोजन
 डाल दिया करो बड़ा पुन्य का काम है
 श्रुग्रहो का जपदान कराते रहा करो मन
 वांछित फल मिलेगा कार्य सिद्ध होंगे जो
 बड़े खर्च के काम समझ रखे हैं कांटा सा
 आनन्द में निकल जायगा काम देवकी
 उनमत्ता में बुद्धि न्यून हो जाती है

७०. है प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमतेजो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत और आराम की सूरत नजर आती है पिछले साल महीने मध्यम रहे खर्च विशेष आमदनी न्यून अब भाग्य उदय होगा और काम फल होगा थोड़ा बिलंब है लाभ की सूरत होकर हट जाती है ईश्वर का स्मरण चित्त लगा कर करो और घृत सांभर दान करो अब नये सिरे से आनन्द का प्रबन्ध होगा एक काम तुम से न्यून बन गया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुत सी प्राप्ति होगी नवीन नवीन वार्ता की समुद्र की तरंग सी चित्त में उठती है

७१. हे प्रच्छन्नकाम तुम्हारेमें विलंब है
 काम अभी ठीक न होगा दशा ना कि स है
 कः ग्रह ना कि म हैं पंचांग खोल कर देखो
 सोचो हो कुछ ठो है कुछ रुई वात कि चिंता
 है जीव की धन की मंगलाचार के कष्ट रूपी
 क्लेश की परंतु तुम सतवादी हो सत्य बोल्ने
 को पसंद करते हो झूट से को धित होते हो परा
 थे काम में मन से प्रीति लगा के करते हो किसी
 का बुरा नही चाहते तुम्हें विद्या कम है परंतु
 बुद्धि अकलबुद्धि विद्वानो में विशेष है हर एक
 की बात की झूट मत्य की परीक्षा समझ लो
 हो एक काम न्यून बन गया था सो ईश्वर की
 भक्ति विशेष कर श्रृंगार जी के ५ ब्राह्मण
 खीर खं ड के जिमाओं मनवांछित फल मि
 लेगा लाभ होगा मिरपे वडा जो फिक्र समझ
 रक्खा है सब काम आनंद में हो जायगा

७२ हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न शृगुण
 इमवक्त बहुत श्रेष्ठ है तुम्हें बिना कारण
 चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न होजाता है
 बुद्धि भ्रमण होजाती है गयासो गया फिर
 आवेगा मिलेगा क्या मिलेगा आराम
 मिलेगा धन मिलेगा मंगलाचार होगा
 पीडा कानाश होगा जीव को खुशी होगी
 अकस्मात् खुश खबरी होगी अपने इष्ट
 देव पित्र देवता के निमित्त वस्त्र मिष्टान्न
 कच्चा दूध मावश्या को पिलाते ग्राहक रो
 रोजगार बढ़ेगा उच्च पदवी पाओगे
 एक जीव का ध्यान मित्र के ध्यान में चित्त
 बहुत रहता है तुम्हें विद्या अध्ययन है परंतु
 अकल बुद्धि तेज है किसी का बुरा नहीं चा
 हते सत्य वार्ता को प्रेम न करत हो स्वर्च है
 अंजाम कुशल है राजद्वार से अन्त फते है

७३ हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है
 जो होगया सो होगया अब खुशी की वार्ता
 होनेवाला है खोटे दिन गये श्रेष्ठ आनेवाले
 हैं आराम होगा कारज फतै होगा जिसकी
 चाहना है मिलेगा और ये जो चित्त में काम
 विचार है देर से होगा दिन तुमको बहुत
 दिनों से मध्यम हैं मर्जिके माफिक लाभ
 नहीं है नष्ट दश में रजक्लेश पीड़ा गुप्त चिंता
 शत्रुता होती है सो अपनी रास पै जो दांती न
 ग्रहना किस हैं दान मंत्र जपा करो तब घर
 में आनन्द मंगलाचार जीवकी प्राप्ति
 यात्रा से लाभ काम फतै होंगे गुप्त प्राप्ति
 होगी तुम्हारे शरीर पै ब्रणायानी फांडे
 फुंसी का निशान है आलस्य रहता है
 नई नई बात का चितवन करते हो

७४ हे प्रच्छन्नक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिसाफिकसे गुजरे और खर्च विशेषलाभ मध्यम सोअवप्राप्तिहोगी जीवकालाभहोगा व्याधारंजनष्टहोगे घरमें खुशीहोगी। चित्तकीचिंताचित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसीनईनई उठतीहैंसोत्रथाजातीहैं एकजीवमें। चित्त बहुतरहताहै अबईश्वर चाहेतो कहींमे खुशीकी बातसुनोगे उच्चपदवी प्राप्तहोगी नाकिसग्रहोंकादान औरसर्वेश्याम शिवजीका भजनकरेकरो और ये जो प्रश्नकिया है वो काम भी फतैहोगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

७५ हे प्रच्छकतुम्हारा कार्यसिद्ध होगा प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ठ आनेवाला है जीवकी चिंता और लाभ का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा होता है ओर ये जो अब फिक्र है खर्च सो दूर होयगा आराम गुप्त वो भी मिलेगा फतै होगा कष्ट नष्ट होगा कर्दग्रह नामकी रास परना किस है सो उन ग्रहों का उपाय विधि पूर्वक पंडित से कराओ बिना दान के कराये कार्यसिद्ध देर से होगा इस कारण चावल मिष्ठान्न स्वैत वस्त्र रजनित अर्थात् श्रद्धा प्रमाण चांदी दान का करना बहुत श्रेष्ठ है मनकी कामना पूर्ण होगी अचानक लाभ की सूरत होगी चित्त स्थिर करके किसी काल ईश्वर का भजन करा करो प्रश्न श्रेष्ठ है अंजाम कुशल है तीर्थयात्रा श्रेष्ठ है

७६ हे प्रच्छ कइस समय के प्रश्न का ये फल
 है कार्य आधीन सेवा हर अर्थात् काम का वृ
 सेवा हर चिंता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त करें
 हैं परंतु उन से कुल हो नही सका १ जीव में
 चित्त बहुतरहता है दशामध्यम के कारण
 अनेक प्रकार की हानि वाता लाप सोचो दो
 समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का
 चितवन होकर निफल होता है कई फिक
 भारी लगे हुवे जीव की प्रसिद्धी फते और
 चंगा होगा और ये जो अब चिंता है सब दूर
 हो पीत दान करो चने की दान हल दीपे ला
 वस्त्र पेले पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्त चिंता
 दूर होगी कार्य फते होगा मन वांछित फल
 प्राप्त होगा दशान्यून के कारण फिक चिंता
 गृह में क्लेश होता है अब दश श्रेष्ठ आने वा
 ली हे ये कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

७७हंप्रचलकतुम्हाराप्रश्नचिंतारूपीक
 एकहैखर्चविशेष जीवकीलालसाजीव
 चिंतातरह २उद्वेगचित्तस्थिरनहींकाम
 काबूमेवाहरहैदूसरेआदमियोंकोभीबहु
 तफिकहैजबदशामध्यमहोतीहैअपनेभी
 परायेहोजातेहैंपरंतुअभीकार्यमेंविलम्ब
 हैकामनापूर्णतोहोगा परंतुपापग्रहोका
 पूजन विधिपूर्वकबटकभैरवकामंत्रभी
 जपावाओ[मंत्र]ओंऐंहींह्रींश्रींबटुकभर्वा
 यआपदुद्धारणायसर्वविघ्ननिवारणायम
 मरक्षाकुरुकुरुस्वाहा । इसमंत्रकेजापसे
 मनोकामनापूर्णहोगीऔरयेजोचित्तको
 दीर्घचिंताहैसोकामहोऔरमिलेगाखर्च
 विशेषहैएकजीवमेंचित्तभीबहुतरदताहै
 लाभअधूरहोतेहैंनईरवार्ताकाचितवन
 रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

७८हेप्रच्छक कामना पूर्णहोगी खुशी
कीवार्ताहोनेवालीहै मिलेगामार्जिकेगा
फिक्र कामहो चित्त उसविनाव्याकुल
सारहताहै दशान्यूनकेकारण ऐसेकाम
हुए धन का खर्च जीवकादुख काम
दूसरेके काबूमें होना औरदोतीन ग्रह
तुम्हारीरासपैकैडेहैं मध्यमहैंपंचांग में
देखोउनमध्यमेंगृहोंका पूजनदानमंत्र
स्थिरचित्त करकेकराओकार्यशीघ्र सि
द्ध होगा और येजो फिक्रहै सोदूरहोगा
औरकई फिक्र खर्चकेआवैहैं सो काम
सिद्धहोंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति
होगी परन्तु विलम्बहैपूजनदानसंकार्य
सिद्धहोगागुप्त लाभहोगाअब अंजाम
अच्छा दीखेहै कार्यमें भी लाभ होगा
शिव जी का पूजन नित्य किया करो

७६ इस समय के प्रश्न का फल यह है कि का
मठी के बैठे गायान बैठे गाइजन का भय
हो जाता है ऐसी दशा में गवन भी होता है
गुप्त चिंतारहे हैं कभी चित्त में कुछ आता है
कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्चा विशेष
पड़ता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आ
राम हो गा सो अवन्यून दशा की चिन्ता वाली
है और श्रेष्ठ आने वाली है परन्तु काम में देर
है इष्ट देव का पूजन करना चाहिये पित्रों के
निमित्त मिष्टान्न वस्त्र कच्चा दूध पीपल को
जल देना श्रेष्ठ है कई माहिने से भग्य की ही
नतायानी मध्यम है पूजन करने से धन की
प्राप्ति जीविका मिलना कष्ट रूपी राज का
दूर होना ये जो अब बहुत चिन्ता है काम
जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम
का वृत्त बाहर होगया दशा मध्यम है

८० हे प्रचलक तुम्हारी रासपै आजकल
 कई ग्रहनाकिसहैं पंचांग खोलकर देखो
 जब ऐसे ग्रह रासपै आते हैं लाभ कम होती
 है शत्रु उत्पन्न होते मित्र व प्यारों से जुदाई
 होती है कष्ट रंज होते हैं आमदनी होती र
 रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझो अधूरा
 होता है एक जीवलात्त सा आस रुगी रहे है
 व्यै दीर्घ लाभ मध्यम हो काम होने को हो
 फिर तार भंग हो जा है सो अब मध्यम ग्रहों
 के दान जाप कराओ आप भी ये मंत्र जपो
 ओं ऐ ह्रीं क्लीं श्री वामुदेवाय नमः व बटुक भैर
 वाय आप दुद्ध रणाय म मरक्षा कुरु कुरु स्वाहा
 दान मंत्र जाप करने मे ये जो तुम्हारे मन की
 कामना है पूर्ण होगी प्राप्ति होगी कष्ट दूर हो
 पुत्रों का लाभ राज से फल मित्र से प्रीति विशेष
 इतने उपाय न बने गा दशा मध्यम रहेगी

८१. हृत्प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है
 जो हो गया सो हो गया अवसुशी की वार्ता
 होनेवाली है खांटे दिन गये श्रेष्ठ आनेवाले
 हैं आराम हो कर जफत हो गाया जिसकी
 चाहना है मिलेगा और ये जो चित्त में काम
 पिचारा है देर से होगा दिन तुमको बहुत
 दिनों से मध्यम हैं मर्जी के माफिक लाभ
 नहीं है नष्ट दशामें रजक शर्पाङ्ग गुप्त चिन्ता
 शत्रुता होती है सो अपनी रास पै जो दांती न
 ग्रहना किस हैं दान मंत्र जाप करो तब घर
 में आनन्द भंगलाचार जीव की साप्ति
 यत्रा से लाभ काम फनै होंगे गुप्त प्राप्ति
 होगी तुम्हारे शरीर पै व्रणयानी फोड़े
 फुंसी का निशान है आलस्य रहता है
 नई नई बात का चिन्तन करते हो

८२. हे प्रचलक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फिक्र से गुजरे और खर्च विशेष लाभमध्यम सो अब प्राप्तिहोगी जीवका लाभहोगा व्याध्या रंजनष्टहोगे घरमें खुशीहोगी चित्तकीचिंताचित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसी नई नई उठतीहैंसोवथाजातीहैं एकजीवमोंचित्त बहुतरहताहै अब ईश्वर चाहता कहींसे खुशीकी बातसुनोगेउच्चपदवी प्राप्तहोगी नाकिस ग्रहोंकादानऔरसुबेइश्याम शिवजीका भजनकराकरे और येजो प्रश्न किया है वो कामभी फतेहोगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरे काम फतेहोगा

८३. हे प्रच्छन्नक तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा
 प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ठ
 आनेवाली है जीवकी चिंता और लाभ
 का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा
 होता है और ये जो अब फिक्र है खर्च सो
 दूर होगा आराम गुप्तबो भी मिलेगा फतै
 होगा कष्ट नष्ट होगा कई ग्रह नाम की
 रासपरना किस है सो उन ग्रहों का उपाय
 बिधि पूर्वक पंडित से कराओ बिना दान के
 कराये कार्य सिद्ध देर से होगा इस कारण चा
 वल मिष्टान्न स्वेत वस्त्र रजानित अर्थात् श्र
 द्धा प्रमाण चांदा दान का करना बहुत श्रेष्ठ
 है मन की कामना पूर्ण होगी अचानक ला
 भ की सूरत होगी चित्त स्थिर करके किसी
 काल ईश्वर का भजन करा करो प्रश्न श्रेष्ठ
 है अंजाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्ठ है

८४, हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का ये फल है कार्य आधीन सेवा हर अर्थात् काम का वृ सेवा हर चिंता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त करे है परंतु उनसे कुछ हो नहीं सक्ता १ जीव में चित्त बहुत रक्षता है दशामध्यम के कारण अनेक प्रकार की दान वार्ता लाप सोचो हो समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का चित्त बन हो कर निफल होता है कई फिक्र भारी लगे हुवे जीव की प्राप्ति होगी फते और चंगा होगा और ये जो अब चिंता है सब दूर हो पीत दान करो चने की दाल हलदी पेल्ला वस्त्र पंले पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्त चिंता दूर होगी कार्य फते होगा मन वांछित फल प्राप्त होगा दशान्यून के कारण फिक्र चिंता गृह में क्लेश होता है अब दश श्रेष्ठ आने वाली है ये कार्य हो कर नवीन कृत्य करोगे ॥

८५. हे प्रच्छकतम्हारा प्रश्न चिंता रूपी क
 एका है स्वर्च विशेष जीव की लालसा जीव
 चिंता तरह उदवेग चित्त स्थिर नहीं काम
 का बू से बाहर है दूसरे आदामियों को भी बहु
 त फिक्र है जब दशामध्यम होती है अपने भी
 पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब
 है कामना पूर्ण तो होगी परंतु पाप गृहों का
 पूजन विधि पूर्वक बटुक भैरव का मंत्र भी
 जपवाओ (मंत्र) ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्री बटुक भैर्वा
 य आपदुद्धारणाय सर्वत्रेधन निवाणीयम
 मरक्षा कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से
 मनो कामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को
 दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा स्वर्च
 विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है
 लाभ अंधरे होते हैं नई रवार्ता का चित्त बन
 रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

८६. द्वेष्टच्छक कामना पूर्ण होगी खुशी की बात होने वाली है मिलेगा मज्जीके माफिक काम हो चित्त उस विना व्याकुल साग्रहता है दशा न्यून के कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च जीविका दुख काम दूसरे के काबू में होना और दो तीन गृह तुम्हारी रास पै कै डे हैं मध्यम हैं पंचाग में देखो उन मध्यम ग्रहों का पूजन दान मंत्र स्थिरचित्त करके कराओ कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और ये जो फिकर हैं सो दूर होगा और कई फिकर खर्च के आवें हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीविका प्राप्ति होगी परंतु बिलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अंजाम अच्छा दीखे है कार्य में भी लाभ होगा शिवजी का पूजन नित्य किया करो

८७, इस समय के प्रश्न का फल ये है कि का
मठा कब बैठेगा यान बैठेगा इज्जत का भय
हो जाता है ऐसी दशा में गवन् भा होता है
गुप्त चिन्ता रहे है कभी चिन्त में कुछ आता है
कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्चा वंश
प होता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आ
राम होगा सो अव न्यून दशा भी चिन्तने वाली
है और श्रेष्ठ आने वाला है परन्तु काम में देर
है इष्ट देव का पूजन कर्गना चाहिये पित्र के
निमित्त मिष्टान्न वस्त्र कच्चा दूध पीपल को
जल देना श्रेष्ठ है कई महीने में भाग्य की ही
नतायानी मध्यम है पूजन करने से धन की
प्राप्ति जीव कामिलना कष्ट रूपी रंज का
दूर होना ये जो अब बहुत चिन्ता है काम
जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम
कबू से बाहर होगया दशा मध्यम है

८८. हे प्रचलक तुम्हारी रास पै आजकल
 कई ग्रह ना किस हैं पंचांग खोलकर देखो
 जब ऐसे ग्रह रास पै आते हैं लाभ कम होती
 है शत्रु उत्पन्न होते मित्र व प्यारों से जुदाई
 होती है कष्ट रंज होते हैं आमदनी होती र
 रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ समझो अधूरा
 होता है एक जीव लालसा आसलगी रहे है
 व्यैदी ध लाभ मध्यम हो काम होने का हो
 फिर तार भंग हो जा है सो अब मध्यम ग्रहों
 के दान जाप करगो आप भी ये मंत्र जपो
 ओ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वासुदेवाय नमः बटुक भैर
 वाय आपदुद्धारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा
 दान मंत्र जाप करने से ये जातुम्हारे मन की
 कामना है पूर्ण होगी प्राप्ति होगी कष्ट दूगं
 पुत्रों की लाभ राज से फूले मित्र से प्रीति विशेष
 इतने उपाय से वने गादशा मध्यम रहेगी

८६. हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है
 अब दशांश्रेष्ठ आने वाला है कामना पूर्ण हो
 गी जो काम चिन्त में धारण करा है सो मिले
 गा चिन्ता दूर होगी काम फलें होंगे मित्रों से
 प्रीति और कष्ट पीड़ा नष्ट होगी जो विचार है
 काम ठीक बैठेंगे दशा बहुत दिनों से मध्यम
 था वयै विशेष दुःखा जीव की प्राप्ति होगी रिण
 की न्यूनता होय प्रश्न श्रेष्ठ है उद्योग व उपाय
 पहले तुमने बहुत करे परानि फल गये काम
 का बुझे बाहर है पर अब ईश्वर आनन्द खुश
 खबर की वार्ता करेंगे गुप्त लाभ होये जो प्रश्न
 विचार है इस के वास्ते श्री देवी दुर्गा लक्ष्मी
 का पूजन कराओ चावल चांदी स्नेत वस्त्र
 श्वेत फूल का दान कराओ कई ग्रह मध्यम
 हैं सो उपाय करने से शीघ्र मन की कामना
 पूर्ण होगी एक जीव का ध्यान रहता है

९० हे प्रच्छक काम का बूझ बाहर है और धन का व्यय विशेष है अकस्मात ये मामला है सो जीव की चिन्ता है और आदमी को भी चिन्ता बहुत है इज्जत का खयाल है बड़े रख च दीखे है और तुम पर उपकार सत्य वार्ता को पसंद करो हो छलाछिद्र के काम को पसंद नहीं करते तुम्हारा प्रश्न जाव और धन का है और इज्जत का भय होता है अनेक प्रकार की वार्ता सोचो हो निर्फल जाती है पता नहीं लगता जतन भी करे अवनवग्रहों का दान मंत्र जाप कराओ ये काम ईश्वर चाहे तो ठीक होने वाला है और आदमी भी सहायता करेंगे कई शत्रु हैं ग्रह दृष्ट देव का पूजन कराने से काम मन इच्छा पूर्ण होगा और मिलेगा वंश की वृद्धि होगी जीव लक्ष्मी प्राप्त होगा आराम होगा

६१. हे प्रच्छन्न कइस समय कै प्रश्न करने का
 ये मामला है स्वरदुस्वभाव है घर में चमत्का
 री हो क्लेश मिटे व्याधाटले जिसका प्रश्न है
 बोशै मिलेगी यान मिलेगी मंगलाचार कद
 तक होगा लाभ खुशी कब तक होगी ऐसी
 दशा कब तक रहेगी जीवकी चिंता है वंश
 की वृद्धि हो आजकल तुम सोचो हो कुछ
 होय है कुछ दोतीन ग्रहरास पैना किस आ
 रहें हैं सांउनका उपाय दान पुन्य जाप करा
 ने से चित्त काम नार्थ सिद्ध होगा खुशी हो
 काम पराये आधीन है अब तुम चींटीनाल
 जिमाओ तो श्रेष्ठ है भूखों को भोजन दो का
 र्य सिद्ध होगा दशा उतरने वाली है मनार्थ
 पूर्ण होंगे अनेक प्रकार की लाभ की सुरत हो
 और ये जो ऊपर से फीक दीखें हैं सो सब
 कांटा सा निकल जायगा दशामध्यम है

९२. इस समय जो आपने प्रश्न किया है
 ऐसे स्वर में ये वार्ता है कि गुप्त चिंता १ जीव
 की लालमाचनी रहती धन से ही सारे कार्य
 सिद्ध होते हैं रोजगार में मध्यम लाभ है सो
 प्राप्त होगी यानहीं मंगलाचार की सुरत क
 बत कहो जिससे घर में चांदना हो आराम
 हो कब तक दिन कै डे हैं गुप्त लाभ भी होगी
 ये झगड़ा कब तक मिटेगा दिन रात चिंत में
 चिंता क्लेश रहे है कब तक दिन अच्छे आवेंगे
 ये प्रश्न ब्राह्मण को देही लड्डू मिष्ठान भोज
 न देने से काम हो अपने इष्ट देव का पूजन
 घर में पित्र पीड़ा का उपाय करो उपाय के
 करने से अब के काम सिद्ध हो इज्जत बढेगी
 सब से जी तो गेश बुरूपी ग्रह हान कर रहे हैं
 दिन रात नई नई वार्ता सोचो हो सब निरुपल
 जाती है परन्तु अंजाम कुशलता है ॥

९३ इस समय के प्रश्न का ये फल है जीव
 चिंता भविष्यति धनन्यूनं दिने दिने मंग
 लाचार विलम्बस्य पराधीन कृत्य यो राज
 द्वार कन्यायं रिथरो कार्य द्रष्टव्यः ग्रह पीडा
 च प्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः मध्यमद
 शा भे मध्यम कार्य हो जाते हैं मन की वार्ता
 कब तक पूर्ण होगी मिलेगी या नहीं रोज
 गार की हानी है कब तक बुद्धि होगी आज
 कल दिन ना किस है घर में चांदना कब
 तक होये काम अब के भी फल होगा जिस
 से वंश की वृद्धि हो तुम्हारी रास पै कई ग्रह
 मध्यम है पत्रा देखो ना किस ग्रह का दान
 मंत्र जा पछाया दान कराने से अब ये मनो
 र्थ सिद्ध होगा काम का बूसे बाहर है मामला
 ईश्वर के आधीन है परन्तु जो बात चित्त में
 और है ये गृह का प्रभाव है अन्त अच्छा है

९६ हे प्रच्छन्नयगुप्तचिंताशरीरेन धनहानी
 च दूश्यते गृहपीडा भविष्यति दूश्यते
 भाग्यमंदता जीवचिंता च प्राप्नोति मंगला
 चारहर्षकंधननष्टनसंदेहो जीवप्रश्ने च प्रा
 प्येह स समय दुःसुभावस्वरहै इसमें भाग्य
 की वृद्धि वंश की वृद्धि मंगलाचारराजद्वार
 में न्याय किसी प्यारे की चिंता विद्या काला
 भरो जगार कृत्य पीडा का यत्न दुःस्वभाव
 स्वरमें इस प्रकार प्रश्न होते हैं सो तीन गृह
 तुम्हारी रसपै आज कलना किस हैं पत्र में
 देखो ना किस हैं यानहीं जरूर हैं इन ना कि
 स गृहों का दान मंत्र जाप कराओ जिससे
 भाग्य की वृद्धि कानाला खुले और उच्चपद
 वी मिले और ये जीव की प्राप्ति के मंगलाचा
 र के काम हों और गुप्त गर्ह दुर्ह चीज प्राप्ति हो
 अंजाम कुशल है जिसे चाहो सो मिलेगा

९७. हे प्रच्छकतुम्हारा प्रश्न जीवरूप लक्ष्मी का है चिंता दीर्घ है और स्वरदुस्व भाव है प्रश्न दो तरह कै से हैं एक शै का अलग हो जाना रोजगार मध्यम होना चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है घम में अंधेरा सा है जीव की लालस है जतन भी करे परन्तु ब्रथागए गुसा चिंता इज्जत का खयाल है और ये खयाल है अब के भी काम हांगारा जद्वांग का उच्यपदवी की अशा है अब चिंता इस प्रश्न की है सो काम ईश्वर आधीन है दिन बहुत समय से मध्यम है भग्य उदय होने को होता है फिर रुक जाता है अब पूजन श्री दुर्गा देवी का कराना चाहिये कर्दग्रहरास पे कै डे हैं उनका उपाय कराना चाहिये काम फल हो कष्ट बाधन प्रहो लाभ की सूरत अच्छी वनेगी वो मिलेगी

९८. हे प्रच्छन्न दीर्घ चिन्ता च प्राप्तोति जीव
 प्राप्तोति न दृश्यते भयभीत हृदा दृश्य परार्था
 नोपि कृत्यगाराजद्वार कं कार्यं धनवश्य
 भविष्यति अंतर्कार्यं महासिद्धिभृगुणाप-
 रिभाषतः तु मयैव हुन दशान्यूनर्था अनेक
 प्रकारकोपि जीवचिन्ता धनका जाना
 गुप्तकेशरहा तुम्हारा चित्त एक जीवमें त
 त्परहै नई नई वार्ता लाभ सोचो हो सोचो
 जाती है अबरो जगार की भी सूतड़ांगीय
 जो जीव की लालसा है पूर्ण है परतु विलंब है
 देरसे फल होगा काममें लाभ है ग छाया
 दान गुड़ गेहूं लाल वस्त्र मुवर्ण दान में शीघ्र
 मन की कामना पूर्ण होगी और दूसरा लाभ
 का कार्य भी सिद्ध होगा कामदेव की उन
 मत्ता में नीच बुद्धि हो जाती है सो ग्रह का प्र-
 भाव है अंजाम कुशल भूमि लाभ होगा

९९. हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से
 बाहर है दिन रात विचित्र तरहर की वार्ता
 लाभ सोचो हो बन कर काम की आनन्द की
 सुरत मध्यम सी होगई ऐसी दशा में गुप्त
 चिंता शत्रु का चित्त में भय साधन का चला
 जाना मित्र का खयाल रहता है रोजगार का
 मध्यम होना कष्ट व्याधा हो खोटी दशा में
 बहुत बातों का खयाल होता है तुम पक्षियों
 को अन्न वा जरा भोजन दो श्री बटुक भैरव
 का पूजन करा ओये मंत्र जपो उँ ऐं ह्रीं लकीं श्रीं
 श्री विष्णु भगवान मम अपराध क्षमाय कुरु
 कुरु सर्व विघ्न विनाशाय मम कामना पूर्ण
 कुरु कुरु स्वाहा मंत्र के कराने से वंश की वृद्धि
 होती है रोजगार श्रेष्ठ होता है जीव की प्राप्ति
 होती है राजद्वार से फतै होती है गई हुई लक्ष्मी
 फिर आती है सर्व कामना सिद्ध होती है

१००. हे प्रच्छक तुम्हारा काम फलें होंगा
 रुख दाहना चलता है इस समय के प्रश्न
 का ये हंफ रुहै चिंता फिर मिटेगा गई मो
 गई अब राख रही जिसने उत्पन्ना किया है
 देगा वही जीव की प्राप्ति होगी राजद्वार से
 लाभ होगा खुशी होगी मंगलाचार होगा
 एक मित्र में विंश प मन रहे है आधी न रहेगा
 भूमि लाभ होगा दशा बहुत दिन से मध्यम
 था अब दशा बदलने वाली है काम देव की
 प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाती है जब जो
 तुम्हारी रास पै ग्रह मध्यम हैं उनका दान
 निश्चै करके कराओ काम होता होता रुक
 जाता है शत्रु हानि कराते हैं काम और के
 आधीन है कई आदमियों से मिल कै
 काम होगा अब दशा अच्छी आने वाली
 है ये जो और काम हे सो वह भी होगा

१०१. हे प्रचलक प्रश्न जरामध्यममालूम
 होता है पुत्र की लाभ सगाई रोजगार मध्य
 म दशा में मुशकिल से होते हैं अर्थात् होता र
 लाभ रुक जाता है धन कानु वसान धन हर
 न होता है राजद्वार से फूट होना मुशकिल हो
 जाता है उच्च पद वी नही मिलती जीव की
 प्यारे की चिंता हो जाती है जो काम सोचो
 तार भंग हो जाती है गुप्त शत्रु भांजी मार देते
 हैं एक मनोर्थ बहुत दिन से सोच रखे है
 ईश्वर चाहे तब हो अब तुम इष्ट देव और घर के
 पित्रों निमित्त कुछ जप दान कराओ जिस
 से मनोर्थ सिद्ध हो जिसकी चाहना है वो मिले
 जीव की प्राप्ति हो रोजगार भारी हो राजद्वार
 से फूट हो गई चाज मिले मंगला चार हो
 इतने पूजन नवने गा कोई कार्य दुरुस्त न हो
 गा काम मध्यम रहेगा अन्त में कुशल है

१०२. हे प्रच्छन्न अवतुम्हाग मनोर्थ सिद्ध
 होगा श्रेष्ठ दशा आने वाली है उत्तम दशा
 गर्व चीज का मिलना रोजगार में लाभ
 अन्न भेला भोजन की प्राप्ति राजद्वार में फल
 घर में मंगला कष्ट व्याधान श्रेष्ठ लाभ
 ओर मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अव
 तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और
 वार्क हैं पत्रा देखो उनका जरा उपाय
 और श्रद्धा से करा दो और श्याम को
 चींटीना लजबतक बने तबतक दो दशा
 उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत
 फिकरे वीचे सो अब ईश्वर चाहे काम पूर्ण
 होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ एक
 जीव में चित्त विशेष कर रहता है सो
 आनन्द में बीतेगी काम देव की उन
 मत्तता में बुद्धि न्यून भी हो जाती है

१०३. हे प्रच्छक अब क्या फिक्र कर रहे हो हा तुम्हें
 खुशखबरी देने वाली है गर्दसो गर्द अब
 रख रही अब बहुत देगा वही मनोर्थ पूर्ण हो
 गे परन्तु एक फिक्र भारी नीखे है ऊपर से
 खर्च आये है पास धन विशेष नहीं दीखता
 परन्तु चिन्ता मत करना काम बड़ा उज्जत के
 साथ बनेगा और कई जगह से लाभ होगा
 करने वाला और है वही फिक्र कर रहा है अब
 विशेष लाभ की सुरत होगी मित्र में चित्त
 बहुत रहना है वे भी चित्त से प्यार करे है अब
 तुम शीघ्र इस काम की सिद्धि चाहो तो श्री
 गंगाजी के पूजा हाथों से खांड के जिमाओ
 और सड़े चावल दही दान करो काम शीघ्र
 फल होगा और गुप्त लाभ होगा घर में चांद
 ना होगा एक काम गुप्त से गुप्त न किस
 बनाया सोई श्वर का ध्यान रख ले करो

१०४. हे प्रच्छकतुमपर बहुतदिनोंसे दश
ना किसथी नही तो निहाल हो जाते लाभ
का मरत में दान पैदा हो गई गुप्त शत्रु राई
करे है अब एक और खुशी की बात तुम्हें होने
को दोर दी है दशाना किसमें धनमालका
निकल जाना पीडा का घरमें धास होना
इज्जत का भय होना रोजगारमें दान हो
ना हुवा हुवा या मंगलाचारका हट जाना
राजद्वारकी चिंता दोनी ये सब बातना कि
स दशा में होती है अब तुम शाम को घृतका
दीपक शिवजीके मद्रमें प्रज्वलित करो
और जलका लोटा भरके शिवजीको और
पापलको दो और इतवारको ब्राह्मणाजि
माओ कई ग्रह तुम्हारी रास परना किस हैं
पत्रेमें देखो सोना किस दशाक फल न्यून
हो जायगा जो मनो कामना है पूर्ण होगी

१०५. हे प्रचलक अब तुम्हारे खांटे दिन गये अच्छे आने वाले हैं अब तक तुमने बहुत नाकिस दशा झेली नाकिस दशा में ही ऐसे काम होते हैं जो फिक्र तुम पर हैं बहुत नुकसान उठाया लाभ कम रहा पीड़ा रूपी क्लेश में धन खर्च और चीज निकल गई इज्जत का भय हुवा परन्तु अब अपने इष्ट देव का पूजन पितृ पीड़ा का जतन और कूर ग्रह का दान निश्चय करके कराओ फिर शीघ्र और नये लाभ दोगे जीवकी प्राप्ति मित्रसे मुलाकात जो है विशेष होगी घर में मंगला चार उच्च पदवी प्राप्त होगी ग्रह की पीड़ा नष्ट होगी शत्रु का नाश और ये जो मन की कामना है सो पूर्ण होगी और बड़े रफिक जो ऊपर से खर्च के दर्ख हैं सो सब आनंद में कांटा सा निकल जायगा काम सिद्ध होगा

१०६. हे प्रच्छक प्रश्न इस समय का बहुत श्रेष्ठ तुम्हारा दीखता है बुरे दिन गये अच्छे आने वाले थे सो तुम्हारा रास पै दो तीन ग्रह मध्यम आ गये और तुमने उनका दान जप करायानहीं इस कारण ऐसे फिक चिंता झेली लाभ कम रहा खर्च विशेष है पीडा की चिंता चित्त में भयसा होना काम उम्हारा भका अभी नहीं बना जीवकी चिंता है बश की ब्रह्मको मंगलाचार होना एक अपना प्यारा है उसी में चित्त बहुत रहना है गजद्वारकी चिंता अब छाया दान और चम्पेकी दाल पेलावस्त्र हलदी स्वर्ण दान कराओ ईश्वर चाहे तो मनकी कामना पूर्ण होगी उच्यपद वी मिलेगी जीवकी प्राप्तिलाभ बढे भूमि से लाभ पीडा नष्ट होगी और राजद्वार से भी काम में फतह होगा

१०७. हे प्रच्छक प्रश्न मध्यम है अभी तुम्हारी मर्जी माफिक काम होने में देर है कष्टरूपी रंजकेश चिंता बहुत रही काम होता होता रुक जावे है ये मध्यम दशा का फल है कहीं गवन होता भी ताज्जुब नहीं एक मित्र से प्रीत बहुत है एक शत्रु गुप्त है अब उस का मिलना कठिन है मंगलाचार में देर है एक जीव की भी अब लाषा है अब तुम नवगृह का पूजन दान करो दशा न्यून बदलेगी श्रेष्ठ आवेगी सो सब काम उत्तम होंगे जीव की लाभ गई हुई चीज फिर आवेगी कष्ट बाधा नष्ट होगी उच्य पद वी मिलेगी राजद्वार से काम सिद्ध होगा गुप्त चिंता मिटेगी चित्त में अनेक प्रकार की वार्ता चित्त बन करते हो चित्त की वार्ता चित्त में समा जाती है अब खुशी की वार्ता सुनने में आवेंगी

१०८. हे प्रच्छन्नक जब दशाजीवपैनाकिस
 आता है और ग्रह चैथे आठवें बारहवें हो जा
 ते हैं तब ऐसे काम होने हैं स्वर्च विशेष लाभ
 कम और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है
 सो आराम मिलेगा और हाथ से निकला
 धन देर से प्राप्त होगा जिस काम को करना
 विचारा हो समझ के करना अभी भाग्य
 उदय होने में किंचित विलम्ब है एक मित्र में
 बहुत मन रहता है सो उस से प्रीत बढ़ेगी और
 मिलेगा नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हा
 रे नाम की रास पै कैड़े हैं उन का पत्रा देख कर
 यत्न करा ओ नहीं तो विशेष क्लेश होगा दुख
 हो ग्रहों का यत्न होते ही आराम होगा उच्च
 पद वी होगी काम में फायदा हो एक जगह
 से विशेष माल मिलेगा विलम्ब से खातर जमा
 रक खोई धर का भजन करा करो भूलो मत

१०६. हे प्रच्छकतुहारी बुद्धि भ्रमै राहती
 हई श्वर को सत्य नहीं मानते जिसने इतना
 बड़ा किया है और बराबर रक्षा करी है
 सो वह कहीं चलानहीं गया है बराबर रक्षा
 करेगा उस का भजन करो अन्त में
 आसा पूरण होगी और गई सो गई अब
 राख रही और वो मिलेगा मौजूद है चिंता
 मत करो आगम की सुरत हो रही है एक
 काम में विशेष लाभ होगा परंतु अब मंगल
 के वर्त और पक्षियों को बाजरा भोजन
 डाल दिया करो बड़ा पुण्य का काम है
 कृष्ण हो का जपदान कराते रह करो मन
 वांछित फल मिलेगा कार्य सिद्ध होंगे जो
 बड़े खर्च के काम समझ रखे हैं कांटा सा
 आनन्द में निकल जायगा काम देव की
 उनमत्ता में बुद्धि न्यून हो जाती है

११०. है प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमने जो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत और आराम की सूरत नजर आती है पिछले साल महीने मध्यम रहे खर्च विशेष आयदनी न्यून अब भाग्य उदय होगा और काम फलदा होगा थोड़ा बिलंब है लाभ की सूरत होकर हट जाती है ईश्वर का स्मरण चित्त लगा कर करो और धृत सांभर दान करो अब नये सिर से आनन्द का प्रबन्ध होगा एक काम तुम से न्यून बन गया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुत सी प्राप्ति होगी नवीन नवीन वार्ता की समुद्र की तरंग सी चित्त में उठती है

१११. हे प्रच्छन्नक काम तुम्हारे में । वलंब है
 काम अभी ठीक न होगा दशा ना किम है
 कर्दग्रह ना किम है पंचांग खोल कर देखो
 सोचो हो कुछ दोहें कुछ कर्दवार्ता की चिंता
 है जीव की धन की मगलाचार की कष्ट रूपी
 क्लेश की परंतु तुम सतवादी हो सत्य बोलने
 को पसंद करते हो झूट से को धिन होते हो परा
 ये काम में मन मे प्रीत लगा के करते हो किसी
 का बुरा नही चाहते तुम्हें विद्या कम है परंतु
 बुद्धि अकल बड़े विद्वानो से विशेष है हर एक
 की बात की झूट सत्य की परीक्षा समझ लो
 हो एक काम न्यून बन गया था सोई श्वर की
 भक्ति विशेष करो श्री गंगा जी के ५ ब्राह्मण
 खीर खं ड के जिमाओ मन वांछित फल मि
 लेगा लाभ होगा मिर पे वडा जो फिक्र समझ
 रक्खा है सब काम आनंद में हो जायगा

११०. है प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमने जो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत और आराम की सूरत नजर आती है पिछले साल महीने मध्यम रहे खर्च विशेष आमदनी न्यून अब भाग्य उदय होगा और काम फल बढ़ेगा थोड़ा बिलंब है लाभ की सूरत होकर हट जाती है ईश्वर का स्मरण चित्त लगा कर करो और धृत सांभर दान करो अब नये सिरे से आनन्द का प्रबन्ध होगा एक काम तुम से न्यून बन गया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुत सी प्राप्ति होगी नवीन नवीन वार्ता की समुद्र की तरंग सी चित्त में उठती है

१११. हे प्रच्छक काम तुम्हारे में विलंब है
 काम अभी ठीक न होगा दशा ना कि मही
 कई ग्रह ना कि मही पंचांग खोल कर देखो
 सोचो हो कुछ हो है कुछ कई बातों की चिंता
 है जीव की धन की मंगलाचार की कष्ट रूपी
 क्लेश की परंतु तुम सतवादी हो सत्य बोलने
 को पसंद करते हो झूट से को धित होते हो परा
 ये काम में मन में प्रीति लगा के करते हो किसी
 का बुरा नहीं चाहते तुम्हें विद्या कम है परंतु
 बुद्धि अकल बड़े विद्वानों से विशेष है हर एक
 की बात की झूट सत्य की परीक्षा समझ लो
 हो एक काम न्यून बन गया था सोई श्वर की
 भक्ति विशेष करो श्री गंगा जी के पूजा हाथ
 खीर खंड के जिमाओ मन वांछित फल मि
 लेगा लाभ होगा निरपेव डा जो फिक समझ
 रखा है सब काम आनंद में हो जायगा

११२ हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न शशुण
 हमवक्त बहुत श्रेष्ठ है तुम्हें बिना कर्ण
 चिंता फिर भयसा उत्पन्न होजाता है
 बुद्धिभ्रमण होजाती है गयासोगया फिर
 आवेगा मिलेगा क्या मिलेगा आराम
 मिलेगा धन मिलेगा मंगलाचार होगा
 पीडा कानाश होगी जीवको खुशी होगी
 अकस्मात् खुशखबरी होगी अपने इष्ट
 देव पित्रदेवताके निमित्त वस्त्र मिष्टान्न
 कच्चादुध मावश्याको पिलाते रह करों
 रोजगार बढेगा उच्च पदवी पाओगे
 एकजीवका ध्यान मित्रके ध्यानमें दित्त
 बहुत रहता है तुम्हें विद्यामध्यम है परंतु
 अकलबुद्धि तेज है किसीका बुरा नही चा
 हते सत्यवार्ताको पनन्द करते हो खर्च है
 अंजाम कुशल है राजद्वारसे अन्त फते है

११३ हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है
 जो होगा सो होगा अब खुशी की वार्ता
 होनेवाली है खोटे दिन गये श्रेष्ठ आनेवाले
 हैं आराम होगा कारज फतै होगा जिसकी
 चाहना है मिलेगा और ये जो चित्त में काम
 विचार है देर से होगा दिन तुमको बहुत
 दिनों से मध्यम हैं मर्जिके माफिक लाभ
 नहीं है नष्ट दश में रज क्लेश पीड़ा गुप्त चिंता
 शत्रुता होती है सो अपनी रास पै जो दोती न
 ग्रहना किस हैं दान मंत्र जपा करो तब घर
 में आनन्द मंगलाचार जीवकी प्राप्ति
 यात्रा से लाभ काम फतै होंगे गुप्त प्राप्ति
 होगी तुम्हारे शरीर पै ब्रणायानी फोडे
 फुसी का निशान है आलस्य रहता है
 नई नई बात का चितवन करते हो

११४ हे प्रच्छन्नक तुम को पिछले दिन
 बहुत नाकिसफिकसे गुजरे और खर्च
 विशेषलाभ मध्यम सोअवप्राप्तिहोगी
 जीवकालाभहोगा व्याधारंजनएहोंगे
 घरमें खुशीहोगीचित्तकीचिंताचित्तमें
 समाजातीहै समुद्रकी तरंगसीनईनई
 उठतीहैंसोत्रथाजातीहैंएकजीवमेंचित्त
 बहुतरहताहै अबईश्वर चाहेतो कहींमे
 खुशीकी बातसुनोगेउच्चपदवी प्राप्तहो
 गी नाकिसग्रहोंकादान औरसर्वेश्याम
 शिवजीका भजनकरेकरो और येजो
 प्रश्नकिया है वो काम भी फतैहोगा
 मिलेगा फिक गया यात्रा से लाभ
 होगा गई सो गई अब राख रही को
 काम कावृ से बाहर है सिद्ध होगा
 ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

११५ हे प्रच्छकतुम्हारा कार्यसिद्ध होगा
 प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ठ
 आनेवाला है जीवकी चिंता और लाभ
 का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा
 होता है ओर ये जो अब फिक्र है खर्च सो
 दूर होयगा आराम गुप्त बोर्मा मिलेगा फत्तै
 होगा कष्ट नष्ट होगा कई ग्रह नामकी
 रास परना किस हैं सो उन ग्रहों का उपाय
 विधि पूर्वक पंडित से कराओ बिना दान के
 कराये कार्यसिद्ध देर से होगा इस कारण चा
 बल मिष्टान्न स्वेत वस्त्र रजनित अर्थात् श्र
 द्धा प्रमाण चांदी दान का करना बहुत श्रेष्ठ
 है मनकी कामना पूर्ण होगी अचानक ला
 भकी सूरत होगी चित्त स्थिर करके किसी
 काल ईश्वर का भजन करा करो प्रश्न श्रेष्ठ
 है अंजाम कुशल है तीर्थयात्रा श्रेष्ठ है

११६ प्रच्छेद इस समय के प्रश्न का ये फल है कार्य आधीन सेवा हर अर्थात् काम का वृ सेवा हर चिंता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त कर हैं परंतु उनसे कुछ हो नहीं सका १ जीव में चित्त बहुत रहता है दशामध्यम के कारण अनेक प्रकार की हानि वाता लाप सोचो दो समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का चितवन होकर निरफल होता है कई फिक्र भारी लगे हुवे जीव की प्राप्ति होगी फते और चंगा होगा और ये जो अब चिंता है सब दूर हो पीत दान करो चने की दान हलदी पेली बख्ख पेली पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्त चिंता दूर होगी कार्य फते होगा मन बांछित फल प्राप्त होगा दशान्यून के कारण फिक्र चिंता गृह में छेश होता है अब दश श्रेष्ठ आने वाली है ये कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

११७ हे प्रच्छकतुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी क
 एक है खर्च विशेष जीव की लालसा जीव
 चिंता तरह २ उद्वेग चित्त स्थिर नहीं काम
 का बूमे वाहर है दूसरे आदमियों को भी बहु
 त फिर है जब दशामध्यम होती है अपने भी
 पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब
 है कामना पूर्ण तो होगा परंतु पापग्रहों का
 पूजन विधि पूर्वक बटुक भैरव का मंत्र भी
 जपावाओ [मंत्र] ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भर्वा
 य आपद्द्वारणाय सर्वविघ्ननिवारणाय मं
 मरक्षा कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से
 मनो कामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को
 दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा खर्च
 विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुतरहता है
 लाभ अधूर होते हैं नई रवार्ता का चितवन
 रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

११. वह प्रच्छन्न कामना पूर्ण होगी खुशी की वार्ता होने वाली है मिलंगा मार्जिकेगा फिक्र काम हो चित्त उस विना व्याकुल सार होता है दशान्यून के कारण ऐमे काम हुए धन का खर्च जीव का दुख काम दूसरे के काबू में होना और दोतीन ग्रह तुम्हारी रास पै कै डे हैं मध्यम हैं पंचांग में देखो उन मध्य में गृहों का पूजन दान मंत्र स्थिर चित्त करके कराओ कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और ये जो फिक्र है सो दूर होगा और कई फिक्र खर्च के आवे हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीव की प्राप्ति होगी परन्तु विलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अंजाम अच्छा देखे कार्य में भी लाभ होगा शिव जी का पूजन नित्य किया करो

११६ इससमयकेप्रश्नका फलयेहै कि का
मठीकबैठेगायान बैठेगाइजनका भय
होजाताहै ऐसीदशामेंगवनभीहोताहै
गुप्तचित्तारहेहैं कभीचित्तमेंकुछआताहै
कभीकुछआताहैऐसीदशामें खर्चाविशे
पहोताहै एकगुप्तमनोर्थहैंसोकवतकआ
रामहोगासो अवन्यूनदशावीचनेवाली
हैऔरश्रेष्ठआनेवालीहै परन्तुकाममेंदेर
हैइष्टदेवकापूजन करनाचाहिये पित्रोंके
निमित्तमिष्टान्नबस्त्रकच्चादूध पीपलको
जलदेना श्रेष्ठहै कईमहिनेसेभ ग्यकीही
नतायानीमध्यमहैपूजनकरनेसेधनकी
प्राप्तीजीवका मिलना कष्टरूपीरजका
दूरहोना येजोअब बहुतचिंताहै काम
जरादेरसे मर्जीकेमार्फिक होगा काम
कावृत्तिसे बाहर होगया दशा मध्यमहै

१२० हे प्रच्छकतुम्हारी रासपै आजकल
 कई ग्रहनाकिसहै पंचांग खोलकर देखो
 जब ऐसे ग्रह रासपै आते हैं लाभ कम होती
 है शत्रु उत्पन्न होता मित्र व प्यारों से जुदाई
 होती है कष्ट रंज होते हैं आमदनी होती र
 रुक जाती है जहां पूर्ण लाभ मध्यम अथवा
 होता है एक जीव लालसा आस लगी रहे है
 व्यर्थ लाभ मध्यम हो काम होने को हो
 फिर तार भंग हो जा है सो अब मध्यम ग्रहों
 के दान जाप कराओ आप भी ये मंत्र जपो
 ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्री वासुदेवाय नमः ववटुक भैर
 वाय आपदुद्धारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा
 दान मंत्र जाप करने से ये जो तुम्हारे मन की
 कामना है पूर्ण होगी प्राप्त होगी कष्ट दूर हो
 पुत्रों कालाभ राज से फतै मित्र से प्रीति विशेष
 इतने उपाय नबने गा दशा मध्यम रहेगी

१२१. हं प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है
 जो हो गया सो हो गया अब खुशी की वार्ता
 होने वाली है खोटे दिन गये श्रेष्ठ आने वाले
 हैं आराम हो कर जफत हो गया जिसकी
 चाहना है मिलेगा और ये जो चित्त में काम
 विचार है देर से होगा दिन तुमको बहुत
 दिनों से मध्यम हैं मर्जी के माफिक लाभ
 नहीं है नष्ट दश में रजक शपीड़ा गुप्त चिंता
 शत्रुता होती है सो अपनी रास पै जो दो तीन
 ग्रहना किस हैं दान मंत्र जाप करो तब घर
 में आनन्द मंगलाचार जीव की साप्ति
 यात्रा से लाभ काम फतै होंगे गुप्त प्राप्ति
 होगी तुम्हारे शरीर पै व्रण यानी फोड़े
 फुंसी का निशान है आलस्य रहता है
 नई नई बात का चिंतन करते हो

१२२. हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फिक्र से गुजरे और खर्च विशेष लाभमध्यम सो अब प्राप्ति होगी जीवका लाभ होगा व्याधायंजन होंगे घरमें खुशी होगी चित्तकी चिंता चित्तमें समाजाती है समुद्रकी तरंगसी नई नई उठती हैं सो बृथा जाती हैं एक जीवमें चित्त बहुतरहता है अब ईश्वर चाहता कहीं से खुशीकी बात सुनोगे उच्चपदवी प्राप्त होगी नाकिस ग्रहोंका दान और सुबेश्याम शिवजीका भजन करा करो और ये जो प्रश्न किया है वो कामभी फल होगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसा करो काम फल होगा

२३. हे प्रच्छक तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा
 प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ठ
 आनेवाली है जीवकी चिंता और लाभ
 का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा
 होता है और ये जो अब फिक्र है खर्च सो
 दूर होगा आराम गुप्त बोभी मिलेगा फतै
 होगा कष्ट नष्ट होगा कई ग्रह नाम की
 रास परना किस है सो उन ग्रहों का उपाय
 विधि पूर्वक पंडित से कराओ बिना दान के
 कराये कार्य सिद्ध देर से होगा इस कारण चा
 वल मिष्टान्न स्वेत वस्त्र रजानित अर्थात् श्र
 द्धा प्रमाण चांदा दान का करना बहुत श्रेष्ठ
 है मन की कामना पूर्ण होगी अचानक ला
 भ की सूरत होगी चित्त स्थिर करके किसी
 काल ईश्वर का भजन करा करो प्रश्न श्रेष्ठ
 है अंजाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्ठ है

१२४, हे प्रच्छन्न इस समय के प्रश्न का ये फल है कार्य आधीन सेवा हर अर्थात् काम का बु सेवा हर चिन्ता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त करे है परंतु उनसे कुछ हो नहीं सक्ता १ जीव में चित्त बहुतरहता है दशा मध्यम के कारण अनेक प्रकार की हानि वार्ता लाप सोचो हो संमुद्र की लहर सी उठती है नई नई वात का चित्त बन हो कर निर्फल होता है कई फिक भारी लगे हुवे जीव की प्राप्ति होगी फते और चंगा होगा और ये जो अब चिन्ता है सब दूर हो पीत दान करो चने की दाल हलदी पेल्ला वस्त्र पेल्ले पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्त चिन्ता दूर होगी कार्य फते होगा मन वांछित फल प्राप्त होगा दशान्यून के कारण फिक चिन्ता गह भे क्लेश होता है अब दशा श्रेष्ठ आने वाली है ये कार्य हो कर नवीन कृत्य करोगे ॥

१२५. हे प्रचलक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्टका है स्वर्च विशेष जीवकी लालसा जीव चिंता तरह उदवेग चित्त स्थिर नहीं काम का बूसे बाहर है दूसरे आदामियों को भी बहुत फिक्र है जब दशामध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगी परंतु पापगृहों का पूजन विधि पूर्वक बटुक भैरव का मंत्र भी जपवाओ (मंत्र) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्री बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय सर्वविघ्ननिवारणाय मरक्षा कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से मनो कामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा स्वर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूरे होते हैं नई रवार्ता का चितवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

१२६. हे प्रच्छक कामना पूर्ण होगी खुशी की वार्ता होने वाली है मिलेगा मर्जी के माफिक काम हो चित्त उस विना व्याकुल सा रहता है दशा न्यून के कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च जीविका दुख काम दूसरे के काबू में होना और दो तीन गृह तुम्हारी रासपै कै डे हैं मध्यम हैं पंचाग में देखो उन मध्यम ग्रहों का पूजन दान मंत्र स्थिरचित्त करके कराओ कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और ये जो फिक्र है सो दूर होगा और कई फिक्र खर्च के आवें हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीविका प्राप्ति होगी परंतु विलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अंजाम अच्छा दीखे है कार्य में भी लाभ होगा शिवजी का पूजन नित्य किया करो

१२७, इस समय के प्रश्न का फल यह है कि का
म ठीक बैठेगा या न बैठेगा इज्जत का भय
हो जाता है ऐसी दशा में गवन् भी होता है
गुप्त चिन्ता रहे है कभी चिन्त में कुल आता है
कभी कुल आता है ऐसी दशा में खर्चा विशेष
पड़ता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आ
राम होगा सो अब न्यून दशा बीचेने वाली
है और श्रेष्ठ आने वाली है परन्तु काम में देर
है इष्ट देव का पूजन कराना चाहिये पित्रों के
निमित्त मिष्ठान्न वस्त्र कच्चा दूध पीपल को
जल देना श्रेष्ठ है कई महीने से भाग्य की ही
नतायानी मध्यम है पूजन करने से धन की
प्राप्ति जीव का मिलना कष्ट रूपी रंज का
दूर होना ये जो अब बहुत चिन्ता है काम
जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम
काबू से बाहर होगया दशा मध्यम है

१२८. हे प्रच्छकतुम्हारी रासपै आज कल
 कई ग्रहना किस हैं पंचांग खोलकर देखो
 जब ऐसे ग्रह रासपै आते हैं लाभ कम होती
 है शत्रु उत्पन्न होते मित्र व प्यारों से जुदाई
 होती है कष्ट रंज होते हैं आमदनी होती रुक
 जाती है जहां पूर्ण लाभ समझो अधूरा
 होता है एक जीव लालसा आस लगी रहे है
 व्यैदी धन लाभ मध्यम हो काम होने को हो
 फिर तार भंग हो जा है सो अब मध्यम ग्रहों
 के दान जाप करगो। आप भी ये मंत्र जपो
 ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वासुदेवाय नमः बटुक भैर
 वाय आप दुद्धारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा
 दान मंत्र जाप करने से ये जातुम्हारे मन की
 कामना है पूर्ण होगी प्राप्ति होगी कष्ट दूगं।
 पुत्रों की लाभ राज से फने मित्र से प्रीति विधि प
 इतने उपाय से बने गा दशा मध्यम रहेगी

१२६. हे प्रच्छन्न कये जो तुमने प्रश्न किया है
 अब दशाश्रेष्ठ आने वाला है कामना पूर्ण हो
 गी जो काम चिंतन धारण करा है सो मिले
 गा चिंता दूर होगी काम फल तै होंगे मित्रों से
 प्रीति और कष्ट पीड़ानष्ट होगी जो विचार है
 कामठी कब बैठेंगे दशा बहुत दिनों से मध्यम
 था व्यैविशेष हुआ जीवकी प्राप्ति होगी रिण
 की न्यूनता होय प्रश्न श्रेष्ठ है उद्योग व उपाय
 पहले तुमने बहुत करे परानिर्फल गये काम
 का बुझे बाहर है पर अब ईश्वर आनन्द मुख
 खरार की वार्ता करेंगे गुप्त लाभ होये जो प्रश्न
 विचार है इस के वास्ते श्री देवी दुर्गा लक्ष्मी
 का पूजन कराओ चांदल चांदी स्नेह दस्त
 श्वेत फूल का दान कराओ कई ग्रह मध्यम
 हैं सो उपाय करने से शीघ्र मन की कामना
 पूर्ण होगी एक जीव का ध्यान रहता है

१३० हे प्रच्छक काम का ब्रमे बाहर है और धन का व्यय विशेष है अकंठ माँत ये माँ मला है सो जीव की चिन्ता है और आदमी को भी चिन्ता बहुत है इज्जत का खयाल है बड़े खर्च दीखे हैं और तुम पर उपकारि सत्य वार्ता को पसंद करो हो छल छिद्र के काम को पसंद नहीं करते तुम्हारा प्रश्न जाव और धन का है और इज्जत का भय होता है अनेक प्रकार की वार्ता सोचो हो निर्फल जाती है पता नहीं लगता जतन भी करे अब न ब्रह्म का दान मंत्र जाप कराओ ये काम ईश्वर चाहे तो ठीक होने वाला है और आदमी भी सहायता करेंगे कई शत्रु हैं ब्रह्म देव का पूजन कराने से काम सनइच्छा पूर्ण होगा और मिलेगा वंश की वृद्धि होगी जीव लक्ष्मी प्राप्त होगा आराम होगा

१३१. हे प्रच्छन्न इस समय कै प्रश्न करने का ये मामला है स्वरदुस्वभाव है घर में चमत्कारी हो क्लेश मिटे व्याधाटले जिसका प्रश्न है वोशै मिलेगी यान मिलेगी मंगलाचार कद तक होगा लाभ खुशी कब तक होगी ऐसी दशा कब तक रहेगी जीवकी चिंता है वंश की वृद्धि हो आजकल तुम सोचो हो कुछ हाय है कुछ दोतीन ग्रहरास पैना किस आ रहे हैं सो उनका उपाय दान पुन्य जाप कराने से चित्त कामनेर्थ सिद्ध होगा खुशी हो काम पराये आधान है अब तुम चिंता नाल जिमाओ तो श्रेष्ठ है भूखों को भोजन दीकार्थ सिद्ध होगा दशा उत्तरने वाली है मनार्थ पूर्ण होंगे अनेक प्रकार की लाभ की सुरत हो और ये जो ऊपर से फीक दीखें हैं सो सब कांटा सा निकल जायगा दशामध्यम है

१३२. इस समय जो आपने प्रश्न किया है
 ऐसे स्वर में ये वार्ता है कि गुप्त चिंता १ जीव
 की लाल माबनी रहती धन से ही सारे कार्य
 सिद्ध होते हैं रोजगार में मध्यम लाभ है सो
 प्राप्त होगी यानहीं मंगलाचार की सुरत क
 बत कहो जिससे घर में चांदना हो आराम
 हो कब तक दिन कै डे हैं गुप्त लाभ भी होगी
 ये झगड़ा कब तक मिटेगा दिन राता चिंत में
 चिंता क्लेश रहे है कब तक दिन अच्छे आवेंगे
 ये प्रश्न ब्राह्मण को देही लड्डू मिष्ठान भोज
 न देने से काम हो अपने इष्ट देव का पूजन
 घर में पित्र पीड़ा का उपाय करो उपाय के
 करने से अब के काम सिद्ध हो इज्जत बढेगी
 सब से जीतो गेश बुरूपी ग्रह हान कर रहे हैं
 दिन रात नई नई वार्ता सोचो हो सब निरफल
 जाती है परन्तु अजाम कुशलता है ॥

१३३इस समयके प्रश्न का ये फल है जीव
 चिंता भविष्यति धन न्यून दिने दिने मंग
 लाचार विलम्बस्य पराधीन कृत्य यो राज
 द्वार कन्या यं रित्यं रोकार्य द्रष्टव्यः ग्रह पीडा
 च प्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः मध्यमद
 शासं मध्यम कार्य हो जाते हैं मन की वार्ता
 कब तक पूर्ण होगी मिलेगी या नहीं राज
 गार की डानी है कब तक वृद्धि होगी आज
 कल दिन ना किस है घर में चांदना कब
 तक होये काम अब के भी फल हो गा जिस
 सेवंश की वृद्धि हो तुम्हारी रास पै कई ग्रह
 मध्यम है पत्रा देखो ना किस ग्रह का दान
 मंत्र जा पछाया दान कराने से अब ये मनो
 र्थ सिद्ध होगा काम का बूसे बाहर है मामला
 ईश्वर के आधीन है परन्तु जो बात चित्त में
 और है ये गृह का प्रभाव है अन्त अच्छा है

१३४ दृष्टच्छकतुम्हारा प्रश्न जीव की
 चिन्ताकाहेकाम पराधीन कबसेबाहर
 होगया बहुतरेयत्नकरोहो बहुतेरीबातें
 सोचाहो मंगलाचार खुशी बंशकीवृद्धि
 राजद्वारविद्याकीसिद्धिधनकीजीतश्रेष्ठ
 दशाभैहोतीहे अबजोतुम्हेयेचिन्ताऔर
 लालसा जीवकीहै सो काममेंविलंबहै
 परंतुमिलेगाऔरहोगापंतुजतनउपाय
 सेइच्छापूर्णहोगी।घरमेंस्वप्नभी दीखेहै
 आरामकी सूरतहोगी जीवप्राप्तिहोगी
 इज्जतकाकामहो संदेहमिटेगा धनका
 मनोर्थपूर्णहोगा देवीका पूजनकराओ
 औरअपनेहाथसे घृतखांडचावलचांदी
 कादानंकरोईश्वरचाहेतोउपायकरतेही
 इच्छापूर्णहोगी औरतुमपरउपकारीहो
 सत्यवादीहो असत्यकोपसंदनहींकरते

१३५. हंप्रच्छन्नचित्तचित्ताभाविष्यतगृ
हकलेशेनसंशयःधनमानमहानिर्पेडा
देहदीधितामंगलाचारकंयोगंवंशवृद्धिच
र्मास्यैराजद्वारकंन्यायंधनहानिविलंब
ताप्रश्नकाफलयेदतरह२ कीवार्तालाभ
सोचाहोकामकाबूसेबाह्रहै दशावईम
हीनेमेमध्यमहैन्यूनदशाभेधेन्हानिवि
षशव्ययलाभमध्यमचित्तक्लेशनकुमान
होतेहैराजद्वारभेभीकाममर्जीकमाफि
कनहींहोतेसोकामकबतकहोगाजोघर
मेंचंदनाचमत्कारीहोवंशकहिंजंतकी
वृद्धिहोऔरवोमिलेएकजीवमेंचित्तविषे
शगहताहैसोशिवजीकापूजनचीटीनाल
देनाश्रेष्ठहैऔरअपनेहाथसेगुडगैहूलाल
वस्त्रलालपुष्पआदिदानकरकेदेईश्वरचा
हेतोअबकामशीघ्रहोकामनापुर्णहोगी

१३६ हे प्रच्छन्न गुप्त चिंता शरीरेन धनहानी
 च द्रश्यते गृहपीडा भाविष्यति द्रश्यते
 भाग्यमंदता जीवचिंता च प्राप्नोति मंगला
 चाग्रहर्षकं धननष्टन सदेहो जीवप्रश्ने च प्रा
 सये इस समय दुःसुभाव स्वर है इसमें भाग्य
 की वृद्धि वंश की वृद्धि मंगलाचार राजद्वार
 में न्याय किसी प्यारे की चिंता विद्या काला
 भरो जगार कत्य पीडा काय तन दुःस्वभाव
 स्वर में इस प्रकार प्रश्न होते हैं सो तीन गृह
 तुम्हारी सपै आज कलना किस हैं पत्र में
 देखो ना किस हैं यानहीं जरूर हैं इन ना कि
 स गृहों का दान मंत्र जाप कराओ जिससे
 भाग्य की वृद्धि काना लाख ले और उच्च पद
 की मिले और ये जीव की प्राप्ति के मंगलाचा
 र के का सहों और गृह गई हुई चीज प्राप्ति हो
 अंजाम कुशल है जिसे चाहो सो मिलेगा

१३७. हे प्रच्छकतुम्हारा प्रश्न जीवरूप लक्ष्मी का है चिंता दीर्घ है और स्वरदुस्व भाव है प्रश्न दो तरफ कैसे हैं एक शैका अलग हो जाना रोजगार मध्यम होना चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है घर में अंधेरा सा है जीव की लालसा है जतन भी करे परन्तु ब्रथाग एगुप्ता चिंता इज्जत का खयाल है और ये खयाल है अब के भी काम हांगाराज द्वार का उच्यपदवी की अशा है अब चिंता इस प्रश्न की है सो काम ईश्वर आधीन है दिन बहुत समय से मध्यम है भग्य उदय होने को होता है फिर रुक जाता है अब पूजन श्री दुर्गा देवी का कराना चाहिये कर्दग्रहरास पे कै डें हैं उनका उपाय कराना चाहिये काम फल हो कष्ट बाध नष्ट हो लाभ की सुरत अच्छी बनेगी वो मिलेगी

१३८. हे प्रच्छन्न दीर्घ चिंता च प्राप्तोति जीव
 प्राप्ति न दृश्यते भयभीत हृदा दृश्य पराधी
 नोपि क्रत्यया राजद्वार कं कार्य धनवश्य
 भविष्यति अंतर्कार्य महासिद्धि भृगुणा प
 रिभाषतः तुम पैव हुत दशान्यून थी अनेक
 प्रकार के फिन्न जीव चिंता धन का जाना
 गुप्त क्लेश रहता तुम्हारा चित्त एक जीव में त
 त्पर है न ई न ई वाता लाभ सोचो हो सो व्रथा
 जाती है अवरो जगार की भी सूत दोगी ये
 जो जीव की लालसा है पूर्ण है परंतु विलंब है
 देर से फल होगा काम में लाभ है ग छाया
 दान गुड़ गेंहूँ लाल वस्त्र मुचर्ण दान से शीघ्र
 मन की कामना पूर्ण होगी और दूसरा लाभ
 का कार्य भी सिद्ध होगा काम देव की उन
 मत्ता में नीच बुद्धि हो जाती है सो ग्रह का प्र
 भाव है अंजाम कुशल भूमि लाभ होगा

१३९. हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से
 बाहर है दिन रात विचित्र तरह की वार्ता
 लाभ सोचो हो बन कर काम की आनन्द की
 सूरत मध्यम सी होगई ऐसी दशामें गुप्त
 चिंता शत्रु का चित्त में भय साधन का चला
 जाना भित्र का ख्याल रहता है रोजगार का
 मध्यम होना कष्ट व्याधा हो खोटी दशामें
 बहुत बातों का ख्याल होता है तुम पक्षियों
 को अन्न बाजरा भोजन दो श्री बटुक भैरव
 का पूजन कराओ ये मंत्र जपो उँ ऐं ह्रीं लकीं श्रीं
 श्रीं विष्णु भगवानमम अपराध क्षमाय कुरु
 कुरु सर्व विघ्ना विनाशाय मम कामना पूर्ण
 कुरु कुरु स्वाहा मंत्र के कराने से वंश की वृद्धि
 होती है रोजगार श्रेष्ठ होता है जीव की प्राप्ति
 होती है राजद्वार से फतै होती है गई हुई लक्ष्मी
 फिर आती है सर्व कामना सिद्ध होती है

१४०. हे प्रच्छक तुम्हारा काम फूट रहा गा
 स्वरदाहना चलता है इस समय के प्रश्न
 का ये हफ्ता है चिंता फिक्र मिटंगा गई सो
 गई अवराखरही जिसने उत्पन्ना किया है
 देगा वही जीवकी प्राप्ति होगी राजद्वार से
 लाभ होगा खुशी होगी मंगलाचार होगा
 एक मित्र में विशेष मन रहे है आधीन रहेगा
 भूमि लाभ होगा दशा बहुत दिन से मध्यम
 था अब दशा बदलने वाली है काम देवकी
 प्रवृत्ता में न्यून बुद्धि हो जाती है जब जो
 तुम्हारी रास पै ग्रह मध्यम हैं उनका दान
 निश्चै करके कराओ काम होता होता रुक
 जाता है शत्रु हानि कराते हैं काम और के
 आधीन है कई आदमियों से मिल के
 काम होगा अब दशा अच्छी आने वाली
 है ये जो और काम हे सो वह भी होगा

१४१. हे प्रच्छकप्रश्नजरामध्यममालूम
 होता है पुत्रकीलाभसगाईरोजगारमध्य
 मदशामें मुशकिलसे होते हैं अर्थात् होता र
 लाभरुकजाता है धनकानुकसानधनहर
 नहोता है राजद्वारसे फतैहोना मुशकलहो
 जाता है उच्चपदवीनहीं मिलती जीवकी
 प्यारेकी चिंताहोजाती है जो कामसोचो
 तारभंगहोजाती है गुप्तशत्रुभांजीमारदेते
 हैं एकमनोर्थ बहुतदिनसे सोचरक्खा है
 ईश्वरचाहे तबहो अवतुमदृष्टदेवऔरघरके
 पित्रोंनिमित्तकुछजपदानकराओ जिस
 से मनोर्थसिद्धहोजिसकी चाहनाहै वो मिले
 जीवकी प्राप्तिहोरोजगारभारीहो राजद्वा
 रसे फतैहो गईचाजमिलेमंगलाचारहो
 इतनेपूजननवनेगा कोईकार्यदुरुस्तनहो
 गा काममध्यमरहेगा अन्तमेंकुशलहै

१४२. हे प्रच्छक अब तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा श्रेष्ठ दशा आने वाली है उत्तम दशा गई चीज का मिलना रोजगार में लाभ अबने लाभ जीव की प्राप्ति राजद्वार में फलै घर में मंगला कष्ट व्याधानष्टयात्रा में लाभ और मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अब तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और वार्की हैं पत्रा देखो उनका जरा उपाय और श्रद्धा से करा दो और श्याम को चींटीना लजबतक बने तबतक दो दशा उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत फिकरे वीचे सो अब ईश्वर चाहे काम पूर्ण होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ एक जीव में चित्त विशेष कर रहता है सो आनन्द में बीतेगी काम देव की उन मत्तता में बुद्धि न्यून भी हो जाती है

१४३. हे प्रच्छक अब क्या फिक्र कर गेहां तुम्हें
 खुशखबरी हानेवाली है गई सो गई अब
 राख रही अब बहुत देगा वही मनोर्थ पूर्ण हो
 गे परन्तु एक फिक्र भारी दीखे है ऊपर से
 खर्च ओव है पास धन विशेष नहीं दीखता
 परंतु चिंता मत करना काम बड़ा डज्जन के
 साथ बनेगा और कई जगह से लाभ होगा
 करने वाला और है वही फिक्र कर रहा है अब
 विशेष लाभ की सूरत होगी मित्र में चित्त
 बहुत रहना है वे भी चित्त से प्यार करे है अब
 तुम शोध इस काम की सिद्धि चाहो तो श्री
 गंगाजी के पुत्राक्षरा ग्वां डके जिमाओ
 और सट्टा चावल दही दान करो काम शीघ्र
 फल होगा और गुप्त लाभ होगा घर में चांद
 ना होगा एक काम गुप्त से गुप्त न किम
 बनाया सोईश्वर का ध्यान रखे करो

१४४. हे प्रच्छकतुमपर बहुतदिनोंसे दश
 नाकिसथीनहींतो निहालहोजातेलाभ
 कामूरतमेंहानपैदा होगईगुप्तशत्रुबुराई
 करेहैअबएकऔरखुशीकीबाततुम्हेंहोने
 कोहोरहीहैदशानाकिसमें धनमालका
 निकलजानापीडाका घरमें बासहोना
 इज्जतकाभयहोना रोजगारमेंहानहो
 नाहुवाहुवाया भंगलाचारका हटजाना
 राजद्वारकीचिंताहोनी येसबबातनाकि
 सदशामेंहोतीहैंअबतुमशामकोघृतका
 दीपकशिवजीके मद्रमें प्रज्वलितकरो
 औरजलकालोटाभरकेशिवजीकोऔर
 पापलकोदो औरइतवारको ब्राह्मणाजि
 माओकईग्रहतुम्हारीरासपरनाकिस हैं
 पत्रेमेंदेखोसोनाकिसदशाकाफलन्यून
 होजायगाजोमनोकामनाहै पूर्णहोगी

१४५. हे प्रच्छन्नक अब तुम्हारे खांटे दिन गये
 अच्छे आने वाले हैं अब तक तुमने बहुत
 नाकिस दशा झेली नाकिस दशा में ही
 ऐसे काम होते हैं जो फिकतुम पर हैं बहुत
 नुकसान उठाया लाभ कम रहा पीड़ा रूपी
 क्लेश में धन खर्च और चीज निकल गई
 इज्जत का भय हुआ परन्तु अब अपने इष्ट
 देव का पूजन पितृ पीड़ा का जतन और कर
 ग्रह का दान निश्चय कर के कराओ फिर शीघ्र
 और नये लाभ होंगे जीवकी प्राप्ति मित्र से
 मुलाकात जो है विशेष होगी घर में मंगला
 चार उच्च पदवी प्राप्त होगी ग्रह की पीड़ा
 नष्ट होगी शत्रु का नाश और ये जो मन की
 कामना है सो पूर्ण होगी और बड़े रफिक
 जो ऊपर से खर्च के देखें हैं सो सब आनंद में
 कांटा सा निकल जायगा काम सिद्ध होगा ।

१४६. हे प्रच्छक प्रश्न इस समय का बहुत श्रेष्ठ तुम्हारा दीखता है बुरे दिन गये अच्छे आने वाले थे सो तुम्हारी रास पै दो तीन ग्रह मध्यम आ गये और तुम ने उन का दान जप करा या नहीं इस कारण ऐसे फिकर चिंता झेली लाभ कम रहा खर्च विशेष है पीडा की चिंता चित्त में भय सा होना काम उम्हाला भका अभी नहीं बना जीव की चिंता है वश की वृद्धि को मंगलाचार होना एक अपना प्यारा है उसी में चित्त बहुत रहता है राजद्वार की चिंता अवछाया दान और चक्र की दाल पे लाव स्र हल दी स्वर्ण दान करा ओ ईश्वर चाहे तो मन की कामना पूर्ण होगी उच्य पद वी मिलेगी जीव की प्राप्तिलाभ बढे भूमि से लाभ पीडा नष्ट होगी और राजद्वार से भी काम में फल रह होगा

१४७. हे प्रच्छक प्रश्न मध्यम है अभी तुम्हारी मर्जी माफिक काम होने में देर है कष्टरूपी रंजकेश चिंता बहुत रही काम होता होता रुक जावे है ये मध्यम दशा का फल है कहीं गवन होता भी ताज्जुब नहीं एक मित्र से प्रीत बहुत है एक शत्रु गुप्त है अब उस का मिलना कठिन है मंगलाचार में देर है एक जीव की भी अब लाषा है अब तुम नवगृह का पूजनदान करो दशा न्यून बदलेगी श्रेष्ठ आवेगी सो सब काम उत्तम होंगे जीव की लाभ गई हुई चीज फिर आवेगी कष्ट बाधा नष्ट होगी उच्यपद वी मिलेगी राजद्वार से काम सिद्ध होगा गुप्त चिंता मिटेगी चित्त में अनेक प्रकार की वार्ता चित्त बन करते हो चित्त की वार्ता चित्त में समा जाती है अब खुशी की वार्ता सुनने में आवेंगी

१४८. हे प्रच्छन्न जब दशा जीव पै ना किस
 आती है और ग्रह चौथे आठवें बारहवें हो जा
 ते हैं तब ऐसे काम होने हैं खर्च विशेष लाभ
 कम और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है
 सो आराम मिलेगा और हाथ से निकला
 धन देर से प्राप्त होगा जिस काम को करना
 विचारा हो समझ के करना अभी भाग्य
 उदय होने में किंचित विलम्ब है एक मित्र में
 बहुत मन रहता है सो उस से प्रीति बढ़ेगी और
 मिलेगा नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हा
 रे नाम की रास पै कैड़े हैं उन का पत्रा देख कर
 यत्न कराओ नहीं तो विशेष क्लेश होगा दुख
 हो ग्रहों का यत्न होते ही आराम होगा उच्च
 पद वी होगी काम में फायदा हो एक जगह
 से विशेष माल मिलेगा विलम्ब से खातर जमा
 रखो ईश्वर का भजन करा करो भूलो मत

१४६. हे प्रच्छन्न कतुहारी बुद्धि श्रमै गारहती
 हई श्वर को सत्य नहीं मानते जिसने इतना
 बड़ा किया है और बराबर रक्षा करी है
 सो वह कहीं चलानहीं गया है बराबर रक्षा
 करेगा उस का भजन करो अन्त में
 आसः पूरण होगी और गई सो गई अब
 राख रही और वो मिलेगा मौजूद है चिंता
 मत करो आगम की सुरत हो रही है एक
 काम में विशेष लाभ होगा परंतु अब मंगल
 केवर्त और पक्षियों को बाजरा भोजन
 डाल दिया करो बड़ा पुण्य का काम है
 क्रूर ग्रहों का जपदान कराते रहा करो मन
 वांछित फल मिलेगा कार्य सिद्ध होंगे जो
 बड़े खर्च के काम समझ रखे हैं कांटा सा
 आनन्द में निकल जायगा काम देव की
 उनमत्ता में बुद्धि न्यून हो जाती है

१५०. है प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमने जो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत और आराम की सूरत नजर आती है पिछले साल महीने मध्यम रहे खर्च विशेष आयदनी न्यून अब भाग्य उदय होगा और काम फल होगा थोड़ा विलंब है लाभ की सूरत होकर हट जाती है ईश्वर का स्मरण चित्त लगा कर करो और घृत सांभर दान करो अब नये सिरे से आनन्द का प्रबन्ध होगा एक काम तुम से न्यून बन गया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुत सी प्राप्ति होगी नवीन नवीन वार्ता की समुद्र की तरंग सी चित्त में उठती है

१५१. हे प्रच्छन्नकाम तुम्हारे मैं । वलंब है
 काम अभी ठीक न होगा दशा ना किम है
 कई ग्रह ना किम है पंचांग खोल कर देखो
 सोचो हो कुल हो है कुछ कई बातों की चिंता
 है जीव की धन की मंगलाचार के कष्ट रूपी
 क्लेश की परंतु तुम सतवादी हो सतगोत्र होने
 को पसंद करते हो झूट से को धित होते हो परा
 ये काम में मन में प्रीति लगा के करते हो किसी
 का बुरा नही चाहते तुम्हें विद्या कम है परंतु
 बुद्धि अकलब डे विद्वानों से विशेष है हर एक
 की बात की झूट सत्य की परीक्षा समझ लो
 हो एक काम न्यून बन गया था सो ईश्वर की
 भक्ति विशेष करों श्री गंगा जी के पूजा हाण
 खीर खंड के जिमाओ मन वांछित फल मि
 लेगा लाभ होगा सिर पे वडा जो फिक्र समझ
 रक्खा है सब काम आनंद में हो जायगा

१५२ हे प्रच्छक् तुम्हारा प्रश्न शगुण
 इमवक्त बहुत श्रेष्ठ है तुम्हें बिना कर्ण
 चिंता फिर भयसा उत्पन्न होजाता है
 बुद्धि भ्रमण होजाती है गयासो गया फिर
 आवेगा मिलेगा क्या मिलेगा आराम
 मिलेगा धन मिलेगा मंगलाचार होगा
 पीडा कानाश होगी जीव को खुशी होगी
 अकस्मात् खुशखबरी होगी अपने इष्ट
 देव पित्रदेवता के निमित्त वस्त्र मिष्टान्न
 कच्चा दूध मावश्या को पिलाते रह करे
 रोजगार बढेगा उच्च पदवी पाओगे
 एक जीव का ध्यान मित्र के ध्यान में चित्त
 बहुरहता है तुम्हें विद्या मध्यम है परंतु
 अकल बुद्धि तेज है किसी का बुरा नहीं चा
 हते सत्यवार्ता को पमन्द करते हो खर्च है
 अंजाम कुशल है राजद्वार से अन्त फते है

१५३ हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है
 जो हो गया सो हो गया अव खुशी की वार्ता
 होने वाली है खोटे दिन गये श्रेष्ठ आने वाले
 हैं आराम होगा कारज फतै होगा जिसकी
 चाहना है मिलेगा और ये जो चित्त में काम
 विचार है देर में होगा दिन तुमको बहुत
 दिनों से मध्यम है मर्जिके माफिक लाभ
 नहीं है नष्ट दश में रज क्लेश पीड़ा गुप्त चिंता
 शत्रुता होती है मो अपनी रास पै जो दांती न
 ग्रहना किस है दान मंत्र जपा करो तब घर
 में आनन्द मंगलाचार जीवकी प्राप्ति
 यात्रा सं लाभ काम फतै होंगे गुप्त प्राप्ति
 होगी तुम्हारे शरीर पै ब्रणायानी फांटे
 फुंसी का निशान है आलस्य रहता है
 नई नई बात का चितवन करते हो

१५२ हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न शृगुण
 इमवक्त बहुत श्रेष्ठ है तुम्हें बिना कर्ण
 चिंता फिर भयसा उत्पन्न होजाता है
 बुद्धिभ्रमण होजाती है गयासो गया फिर
 आवेगा मिलेगा क्या मिलेगा आराम
 मिलेगा धन मिलेगा मंगलाचार होगा
 पीडा कानाश होगा जीव को खुशी होगी
 अकस्मात् खुशखबरी होगी अपने इष्ट
 देव पित्रदेवता के निमित्त वस्त्र मिष्टान्न
 कच्चा दूध मावश्या को पिलाते रह करो
 रोजगार बढेगा उच्च पदवी पाओगे
 एक जीव का ध्यान मित्र के ध्यान में दिन
 बहुरहता है तुम्हें विद्या मध्यम है परंतु
 अकल बुद्धि तेज है किसी का बुरा नहीं चा
 हते सत्यवार्ता को पमन्द करते हो खर्च है
 अंजाम कुशल है राजद्वार से अन्त फते है

१५३ हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है
 जो हो गया सो हो गया अब खुशी की वार्ता
 होने वाली है खोटे दिन गये श्रेष्ठ आने वाले
 हैं आराम होगा कारज फतै होगा जिसकी
 चाहना है मिलेगा और ये जो चित्त में काम
 विचारा है देखे होगा दिन तुमको बहुत
 दिनों से मध्यम हैं मर्जिके माफिक लाभ
 नहीं है नष्ट दश में रजक्लेश पीड़ा गुप्त चिंता
 श्रुता होती है सो अपनी रास पै जो दोती न
 ग्रहना किस हैं दान मंत्र जपा करो तब घर
 में आनन्द मंगलाचार जीवकी प्राप्ति
 यात्रा से लाभ काम फतै होंगे गुप्त प्राप्ति
 होगी तुम्हारे शरीर पै ब्रणयानी फांड़े
 फुंसी का निशान है आलस्य रहता है
 नई नई बात का चितवन करते हो

१५४ हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन
 बहुत नाकिसाफिकसे गुजरे और खर्च
 विशेषलाभ मध्यम सोअवप्राप्तिहोगी
 जीवकालाभहोगा व्याधारंजनष्टहोगे
 घरमें खुशीहोगीचित्तकीचिंताचित्तमें
 समाजातीहै समुद्रकी तरंगसीनईनई
 उठतीहैंसोब्रथाजातीहैंएकजीवमेंचित्त
 बहुतरहताहै अबईश्वर चाहेतो कहींमे
 खुशीकी बातसुनोगेउच्चपदवी प्राप्तहो
 गी नाकिसअड़कादान औरसबेइयाम
 शिवजीका भजनकरेकरो और येजो
 प्रश्नकिया है वो काम भी फतैहोगा
 मिलेगा फिक्र गया दात्रा से लाभ
 होगा गई सो गई अब राख रही को
 काम कावृ से बाहर है सिद्ध होगा
 ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

१५५ हे प्रच्छकतुम्हारा कार्यसिद्ध होगा
 प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ठ
 आनेवाला है जीवकी चिंता और लाभ
 का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा
 होता है और ये जो अब फिक्र है खर्च सो
 दूर होयगा आराम गुप्त वो भी मिलेगा फतै
 होगा कष्टनष्ट होगा कई ग्रह नामकी
 रास परना किस हैं सो उन ग्रहों का उपाय
 विधि पूर्वक पंडित से कराओ विना दान के
 कराये कार्यसिद्ध देर से होगा इस कारण चा
 वल मिष्टान्न स्वेत वस्त्र रजनि त अर्थात् श्र
 द्धा प्रमाण चांदी दान का करना बहुत श्रेष्ठ
 है मनकी कामना पूर्ण होगी अचानक ला
 भकी सुरत होगी चित्त स्थिर करके किसी
 काल ईश्वर का भजन करा करो प्रश्न श्रेष्ठ
 है अंजाम कुशल है तीर्थयात्रा श्रेष्ठ है

१५६ हे प्रच्छ कइस समय के प्रश्न का ये फल
 है कार्य आधीन सेवा हर अर्थात् काम का वृ
 सेवा हर चिंता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त करें
 हैं परंतु उनमें कुछ हो नहीं सक्ता १ जीव में
 चित्त बहुत रहता है दशामध्यम के कारण
 अनेक प्रकार की हानि वाता लाप सोचो दो
 समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का
 चित्त बन होकर निर्फल होता है कई फिक
 भारी लगे हुवे जीव की प्रसिद्धी फल और
 चंगा होगा और ये जो अब चिंता है सब दूर
 हो पीत दान करो चने की दान हलदी पेला
 वस्त्र पेले पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्त चिंता
 दूर होगी कार्य फल होगा मन बांछित फल
 प्राप्त होगा दशान्यून के कारण फिक चिंता
 गृह में क्लेश होता है अब दश श्रेष्ठ आने वा
 ली है ये कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

१५७ हे प्रच्छकतुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्ट का है खर्च विशेष जीव की लालसा जीव चिंता तरह २ उद्वेग चित्त स्थिर नहीं काम का वृत्ति बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहुत फिक्र है जब दश मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परन्तु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगा परन्तु पापग्रहों का पूजन विधि पूर्वक बटुक भैरव का मंत्र भी जपावाओ [मंत्र] ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भवार्थाय आपद्द्वारणाय सर्वविघ्ननिवारणाय मरक्षा कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से मनो कामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूर होते हैं नई २ वार्ता का चितवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

१५८ हे प्रच्छक कामना पूर्ण होगी खुशी की वार्ता होने वाली है मिलेगा मार्जिके मा फिक काम हो चित्त उस विना व्याकुल सार होता है दशान्यून के कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च जीव का दुख काम दूसरे के काबू में होना और दोतीन ग्रह तुम्हारी रास पै कै डे हैं मध्यम हैं पंचांग में देखो उन मध्यम गृहों का पूजन दान मंत्र स्थिर चित्त करके कराओ कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और ये जो फिक है मोदू रहेगा और कई फिक खर्च के आवैं हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीव की प्राप्ति होगी परन्तु विलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अजाम अच्छा देखे कार्य में भी लाभ होगा शिव जी का पूजन नित्य किया करो

१५६ इस समय के प्रश्न का फल यह है कि का
मठी के बैठे गायान बैठे गाइ जन का भय
हो जाता है ऐसी दशा में गवन भी होता है
गुप्त चिन्ता रहे है कभी चित्त में कुछ आता है
कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्चा विशेष
पड़ता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आ
राम होगा सो अब न्यून दशा बीचने वाली
है और श्रेष्ठ आने वाली है परन्तु काम में देर
है इष्ट देव का पूजन करना चाहिये पित्रों के
निमित्त मिष्टान्न वस्त्र कच्चा दूध पीपल को
जल देना श्रेष्ठ है कई महिने से भग्य की ही
नतायानी मध्यम है पूजन करने से धन की
प्राप्ति जीव का मिलना कष्ट रूपी रज का
दूर होना ये जो अब बहुत चिन्ता है काम
जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम
काबू से बाहर होगया दशा मध्यम है